श्री चित्रापुर मठ
पूजन-विधि

फरवरी - २०२६

॥ सभा प्रारम्भ प्रार्थना ॥

ॐ दक्षिणास्यसमारम्भा शङ्कराचार्यमध्यमा ।
अस्मदाचार्यपर्यन्ता स्मर्या गुरुपरम्परा ॥ १ ॥

श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयं करुणालयम् ।
नमामि भगवत्पादं शङ्करँल्लोकशङ्करम् ॥ २ ॥

शङ्करं शङ्कराचार्यं केशवं बादरायणम् ।
सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः ॥ ३ ॥

ईश्वरो गुरुरात्मेति मूर्तिभेदविभागिने ।
व्योमवद् व्याप्तदेहाय दक्षिणामूर्तये नमः ॥ ४ ॥

परिज्ञानाश्रम श्रीगुरुशङ्कर परिज्ञानाश्रम शङ्करसद्गुरु ।
केशव वामन कृष्ण पाण्डुरङ्ग आनन्द परिज्ञानगुरु ।
सद्योजात शङ्करसद्गुरु ॥ ५ ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुस्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ६ ॥

ॐ सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु । सहवीर्यं करवावहै ॥
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥ ७ ॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

प्रकाशक
प्रकाशन समिति,
श्री चित्रापुर मठ
शिराली
जिला - उत्तर कन्नड़ – ५८१ ३५४
कर्नाटक, भारत

ई मेल - admin@chitrapurmath.in
वेब साइट - www.chitrapurmath.net

प्रथम संस्करण - २६ फरवरी २०२६
© सर्वाधिकार सुरक्षित

श्री चित्रापुर मठ

पूजन-विधि

परमपूज्य श्रीमत् पाण्डुरङ्गाश्रम स्वामीजी

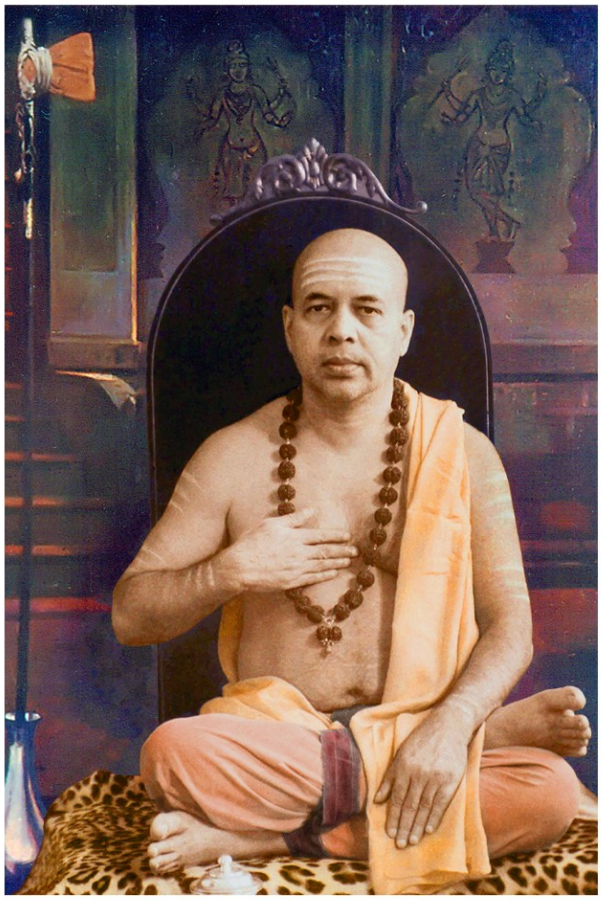

परमपूज्य श्रीमद् आनन्दाश्रम स्वामीजी

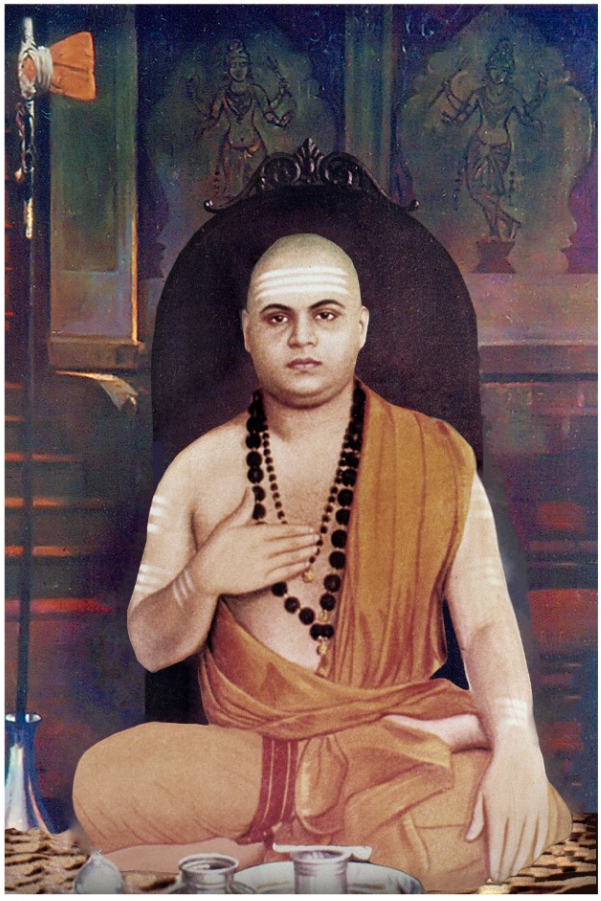

परमपूज्य श्रीमत् परिज्ञानाश्रम स्वामीजी
(तृतीयः)

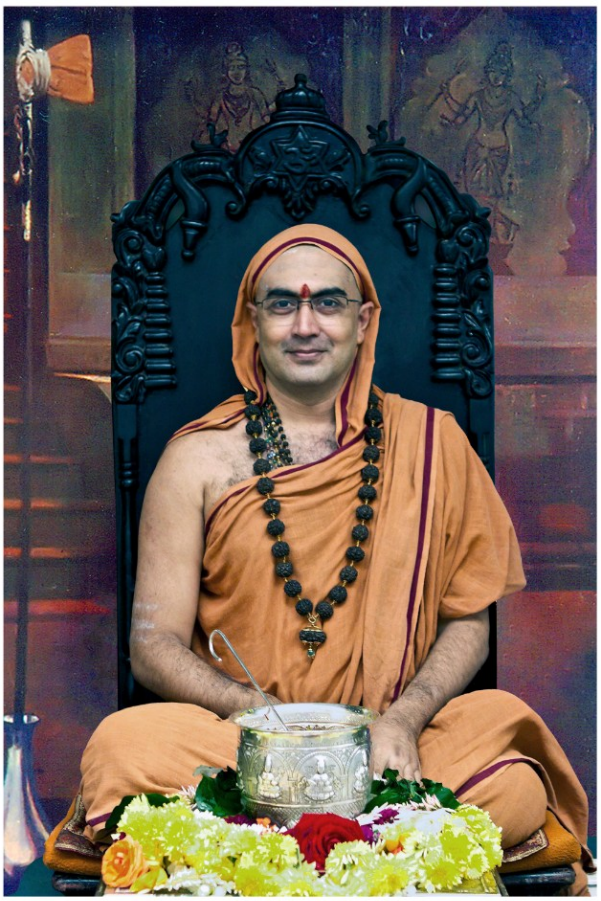

परमपूज्य श्रीमत् सद्योजात शङ्कराश्रम
स्वामीजी

अनुक्रमणिका

विषय		पृष्ठ क्रमांक
१.	श्री देवी अनुष्ठानम्	1
२.	श्री गुरु पूजनम्	8
३.	श्री शिव पूजनम्	39
४.	श्री देवी पूजनम्	71

श्री देवी अनुष्ठानम्

श्री दुर्गा परमेश्वरी देवी

॥ ॐ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री भवानीशङ्कराय नमः ॥ श्री मात्रे नमः ॥

श्री देवी अनुष्ठानम् हेतु आवश्यक सामग्री

१. देवी का चित्र अथवा विग्रह (मूर्ति)
२. चौरंग/चौकी (देवी का चित्र अथवा विग्रह(मूर्ति) स्थापित करने हेतु)
३. लाल रंग का रेशमी वस्त्र चौरंग/चौकी पर बिछाने के लिए
४. लाल रंग के फूल, ताजे फूलों की माला देवी के चित्र/ विग्रह(मूर्ति) के लिए
५. दीपक
६. दीपक को बुझने से बचाने हेतु काँच का आवरण
७. गाय के दूध से बना घी
८. दो लंबी बातियाँ
९. स्वयं का आसन
१०. स्वयं की जपमाला (गोमुख में)
११. आचमन पात्र, चम्मच, थाली/प्लेट (आचमन पात्र रखने हेतु)
१२. शुद्ध जल
१३. हाथ पोंछने के लिए स्वच्छ तौलिया

सामान्य निर्देश

१. मंत्रों की सही गणना रखने हेतु जपमाला के मेरु / शिखा मणि से आरंभ कर, दोनों ओर २८ वीं और २९ वीं मणि के बीच में ऊन का अथवा रेशम का छोटा धागा बाँधें।
१. चौरंग/चौकी पर लाल रंग का वस्त्र बिछाएँ। देवी के चित्र / विग्रह(मूर्ति) को उस पर स्थापित करें।
२. देवी के चित्र / विग्रह(मूर्ति) को ताजे फूलों का हार चढ़ाकर लाल फूलों से अलंकृत करें।
३. अपनी बाईं ओर चौरंग/चौकी पर देवी के सामने घी का प्रज्वलित दीपक रखें।
४. देवी के सम्मुख स्वयं अपने आसन पर पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख होकर बैठें।

इसके पश्चात् श्री देवी अनुष्ठान का आरंभ करें।

॥ श्री देवी अनुष्ठानम् ॥

१) आचमनम्

नीचे दिये हुए प्रत्येक मंत्र का क्रम से एक बार उच्चारण करें। प्रथम तीन मंत्रों के उच्चारण में प्रत्येक स्वाहा के पश्चात् आचमन पात्र से आचमनी द्वारा एक चम्मच जल ग्रहण करें। चतुर्थ (अंतिम) स्वाहा पर आचमनी द्वारा एक आचमनी जल दाहिनी हथेली की मध्यमा और अनामिका के ऊपर से आचमन पात्र की थाली (प्लेट) में छोड़ें।

ॐ ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ क्लीं शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।

हस्त प्रक्षालन करें (हाथ धोवें)।

२) प्राणायामः

मन को समाहित (एकाग्र) करने के लिए अनुलोम-विलोम प्राणायाम के तीन आवर्तन १:२ के अनुपात में करें। (१:२ अनुपात अर्थात् श्वास लेते समय मन में एक से चार तक गिनें तथा श्वास छोड़ते समय मन में एक से आठ तक गिनें)।

अनुलोम-विलोम प्राणायाम की विधि -

अ. दाहिने नासिका छिद्र को दाहिने हाथ के अंगूठे से बंद कर बायें नासिका छिद्र से धीरे धीरे मन में एक से चार की गिनती करते हुए श्वास अंदर लें, तत्पश्चात् अनामिका या मध्यमा से बायें नासिका छिद्र को बंद कर दाहिने छिद्र से धीरे धीरे एक से आठ की गिनती करते हुए श्वास बाहर छोड़ें ; पुनः इसी प्रकार गिनते हुए दाहिनी ओर से श्वास लें तथा बायीं ओर से छोड़ें, यह एक आवर्तन हुआ।

आ. इसी प्रकार शेष दो आवर्तन भी करें।

आचमन पात्र के जल से हस्त प्रक्षालन करें। (हाथ धोवें)।

३) आत्मप्रोक्षणम्

दाहिने हाथ में आचमनी पकड़कर बायीं हथेली पर आचमन पात्र से थोड़ा जल लेवें।
नीचे दिये हुए मंत्र का उच्चारण करते हुए, क्रमशः दाहिने हाथ की मध्यमा एवं अनामिका को बायीं हथेली के जल में डुबोकर बायीं ओर नीचे, ऊपर, वैसे ही दाहिनी ओर ऊपर, नीचे इस क्रम में प्रोक्षण करें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वाऽवस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

बायीं हथेली का शेष जल थाली (प्लेट) में छोड़ दें।

४) आसनशुद्धिः

आसन के दाहिने, अग्र कोने को थोड़ा ऊपर उठायें।
दाहिनी अनामिका में चंदन/गंध लगाकर चित्रानुसार दर्शाई दिशा में हाथ उठाए बिना भूमि पर त्रिकोण बनायें ।

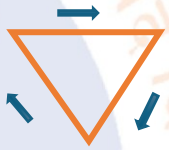

हस्त प्रक्षालन करें (हाथ धोवें)।
दाहिने हाथ की अनामिका और मध्यमा को त्रिकोण के बीच में रखकर, बायें हाथ से दाहिनी कोहनी को स्पर्श करते हुए मंत्र का उच्चारण करें।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

हस्त प्रक्षालन करें (हाथ धोवें)।

५) दिग्बन्धः

मस्तक से थोड़ा ऊपर दोनों हथेलियों को जोड़कर चित्रानुसार त्रिशूल मुद्रा बनायें।

श्लोक का उच्चारण करते हुए कलाई का उपयोग कर दक्षिणावर्त (बायीं से दायीं ओर) चारों दिशाओं में त्रिशूल मुद्रा को तीन बार घुमायें।

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

श्लोक के अंत में मुद्रा से सामने की ओर एक झटका दें।

६) सङ्कल्पः

बायें हाथ में जल से भरी आचमनी पकड़कर दाहिने हाथ की मध्यमा और अनामिका से आचमनी के मुख का स्पर्श करते हुए नीचे दिये हुए संकल्प का पाठ करें।

अस्मद् मठस्य मठीयसमाजस्य च अभिवृद्ध्यर्थं, गुरुसेवायां निरतानां साधकानां सेवकवर्गाणां च कार्येषु, शत्रुत्व-स्वरूपी-प्रत्यूहविनाशार्थं, भगवती-जगदम्बाप्रसादेन उत्तरोत्तर-अभिवृद्धिद्वारा, सद्बुध्दि-स्थिरता-पूर्वक-शान्ति-समाधानलाभार्थं, सपरिवार-श्रीजगदम्बादेवताप्रीत्यर्थं, गुर्वनुज्ञया प्रेरिताः वयं देवीमन्त्रजप-अनुष्ठानाख्यं कर्म करिष्यामः॥

बायें हाथ की आचमनी का जल दाहिने हाथ की मध्यमा एवं अनामिका के बीच से थाली (प्लेट) में छोड़ दें।

७) मन्त्राः

जपमाला की प्रत्येक मणि पर निर्देशानुसार हर मंत्र का एक बार उच्चारण होगा।
प्रथम मणि से आरंभ कर पहले मंत्र (अ) का उच्चारण २८ बार करें।
ऊन के धागे से माला को घुमाकर दूसरे मंत्र (आ) का उच्चारण २८ बार करें।
मेरु / शिखा मणि पर माला को घुमाकर तीसरे मंत्र (इ) का उच्चारण १०८ बार करें।
पुनः मेरु / शिखा मणि पर माला को घुमाकर दूसरे मंत्र (आ) का उच्चारण २८ बार तथा ऊन के धागे से फिर माला को घुमाकर पहले मंत्र (अ) का उच्चारण २८ बार करते हुए मेरु तक पहुँचें।

अ - आ - इ - आ - अ

२८ - २८ - १०८ - २८ - २८

अनुष्ठान के तीन मंत्र -

अ . सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥
आ . शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वनेन च॥
इ . सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरि-विनाशनम्॥

८) समर्पणम्

बायें हाथ में आचमन पात्र से आचमनी में जल लेकर दाहिने हाथ की मध्यमा एवं अनामिका द्वारा आचमनी के मुख को स्पर्श करते हुए पकड़कर नीचे दिये हुए श्लोक का उच्चारण करें।

गुह्यातिगुह्यगोप्त्रि त्वं, गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

आचमनी का जल दाहिने हाथ की मध्यमा एवं अनामिका के बीच से थाली(प्लेट) में छोड़ें।
नमस्कार करें।
अनुष्ठान के अर्पण के पश्चात् तीन मिनट तक आँखें मूँदकर शांत स्थिर होकर बैठें।

॥ ॐ नमः पार्वतीपतये हर हर महादेव॥

श्रीगुरुपूजनम्

॥ ॐ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री भवानीशङ्कराय नमः ॥ श्री मात्रे नमः ॥

श्री गुरु पूजन हेतु आवश्यक सामग्री

पूजा - द्रव्य / पात्र / वस्तु	पूजा - सामग्री
श्री गुरु पादुका	पुष्प / पुष्पदल
सोमसूत्र/थाली (प्लेट) श्री गुरु पादुका के लिए	(फूलों की पंखुड़ियाँ)
चौरंग / चौकी	गंध (चंदन)
आसन, स्वयं की जपमाला (गोमुख में)	अक्षत
कलश	कुमकुम (रोली)
स्नान पात्र	बिल्वपत्र (बेलपत्ती)
दो आचमन पात्र	तुलसी
तीर्थ-पात्र	कपूर
फूलों से सजी थाली (प्लेट) एवं पूजा सामग्री रखने के लिए अन्य थाली	अगरबत्ती / धूप
तेल का दिया / दीपक	बाती
घी का दिया / दीपक	नैवेद्य
नैवेद्य आरती (एक बाती वाली घी की आरती), कपूर आरती, नीराजन के लिये पाँच दियों वाली आरती	पान-सुपारी
अगरबत्ती / धूपदानी (स्टॅण्ड)	दक्षिणा
शंख (शंखदानी (स्टॅण्ड) सहित)	माचिस
स्वच्छ तौलिया / रुमाल (दो – एक पादुका के लिए, एक स्वयं के लिए)	शुद्ध जल
घंटी	
निर्माल्य पात्र	
बुझी माचिस तीलियों के लिये पात्र	

सामान्य निर्देश

१. श्री गुरु पूजन में चांदी की छोटी सी श्री गुरु पादुका का उपयोग करें।

२. पूजन विधि में उपयोग में आने वाले सभी पात्र ताँबे, पीतल या चाँदी के हों। परंतु बड़ी थाली, निर्माल्य पात्र स्टील के हो सकते हैं।

३. स्वच्छ चौरंग / चौकी पर एक सोमसूत्र/थाली/प्लेट में श्री गुरु पादुका स्थापित करें।

४. प्रधान दीपक (जो पूजा के आरंभ से समापन तक प्रज्वलित रहेगा), एक अन्य दीपक (पूजन विधि के लिये), धूप एवं नीराजन(आरती) के लिये निर्देश -

- प्रधान दीपक - इसमें तेल भरकर दो बाती आपस में पिरोकर उसमें रखें। बाती के सिरे पर शीघ्र प्रज्वलन हेतु थोड़ा कपूर लगा सकते हैं।
- अन्य दीपक - दो बाती आपस में पिरोकर घी में डुबोकर इसमें रखें। बाती के सिरे पर शीघ्र प्रज्वलन हेतु थोड़ा कपूर लगा सकते हैं।
- धूप - केवल एक ही धूप / अगरबत्ती को स्टॅण्ड / धूपदानी में लगाकर प्रज्वलन हेतु तैयार रखें।
- नीराजन(आरती) - एक-आरती के लिये, दो बाती आपस में पिरोकर, घी में डुबोकर इसमें रखें। साथ ही एक टुकड़ा कपूर, अक्षत एवं कुमकुम नीराजन के हत्थे पर रखें।

५. संकल्प के लिए पूजन के क्षेत्र, नगर, संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, दिवस (वार/दिन), नाम एवं गोत्र की जानकारी तैयार रखें।

६. चंदन, अक्षत, पुष्प अर्पण करते समय मृग मुद्रा का उपयोग करें। तर्जनी तथा कनिष्ठिका का उपयोग पूजन में वर्ज्य है।

७. कलश पूजन के पश्चात् उसे नियत स्थान से न हिलायें।

८. आसन -

- प्रधान दीपक प्रज्वलित करने से पहले स्वयं के बैठने के लिये आसन पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख होकर बैठने हेतु उचित स्थान पर फैलाकर रखें।

- आसन पर पैर न रखें।
- पूजा समापन के पश्चात् तुरंत आसन तहाकर यथास्थान रखें।

९. चौरंग / चौकी पर रखे प्रधान दीपक की लौ का उपयोग धूप / अगरबत्ती या अन्य दीपक प्रज्वलित करने के लिये न करें।

१०. श्री गुरु पादुका को स्नान कराने के पश्चात् श्री गुरु पादुका पर जल अर्पण न करें।

११. हस्त प्रक्षालन (हाथ धोवें) -

- हाथ धोने के लिये स्वयं के नित्य उपयोग में लेने वाले आचमन पात्र का ही उपयोग करें।
- पूजन के दौरान भूमि अथवा शरीर का स्पर्श होने पर हस्त प्रक्षालन करें (हाथ धोवें)।
- किसी अन्य वस्तु का, जो अभिमंत्रित न हो, स्पर्श होने पर हस्त प्रक्षालन करें (हाथ धोवें)।
- आरती लेने के पश्चात् हस्त प्रक्षालन करें (हाथ धोवें)।
- निर्माल्य स्पर्श करने के पश्चात् हस्त प्रक्षालन करें (हाथ धोवें)। (निर्माल्य को पात्र में डालते समय उसे ना सूंघें)

१२. यदि छोटे बच्चे पूजन कर रहे हैं, तब उनके माता-पिता दीप, धूप प्रज्वलित करने के लिये उनकी सहायता करें। उनके हाथ में माचिस न दें।

१३. पूजन के पूर्व कलश, स्नानपात्र तथा आचमन पात्र में शुद्ध जल भरें।

१४. पूजन प्रारंभ करने के पूर्व प्रधान दीपक प्रज्वलित करें।

१५. श्री गुरु का ध्यान कर, उन्हें प्रणाम कर पूजन प्रारंभ करें।

१६. पूजन विधि समापन के पश्चात् पूजा स्थान स्वच्छ करें ताकि पूजा में उपयोग की हुई किसी भी वस्तु पर आपका पैर न पड़े।

पूजा सामग्री का सज्जीकरण (व्यवस्था)

पूजा-पूर्वाङ्गम्

आचमनम्

नीचे दिये हुए प्रत्येक मंत्र का क्रम से एक बार उच्चारण करें।
प्रथम तीन मंत्रों के उच्चारण में प्रत्येक स्वाहा के पश्चात् अपने आचमन पात्र से एक चम्मच जल ग्रहण करें। चतुर्थ (अंतिम) स्वाहा पर आचमनी द्वारा एक आचमनी जल दाहिनी हथेली की मध्यमा और अनामिका के ऊपर से आचमन पात्र की थाली (प्लेट) में छोड़ें।

ॐ ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ क्लीं शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।

स्वयं के आचमन पात्र के जल से हस्त प्रक्षालन करें।

प्राणायामः

मन को समाहित (एकाग्र) करने के लिए अनुलोम-विलोम प्राणायाम के १:२ के अनुपात में तीन आवर्तन करें। (१:२ अनुपात अर्थात् श्वास(सांस) लेते समय मन में एक से चार तक गिनें तथा श्वास (सांस) छोड़ते समय मन में एक से आठ तक गिनें)

अनुलोम-विलोम प्राणायाम की विधि –

अ. दाहिने नासिका छिद्र को दाहिने हाथ के अंगूठे से बंद कर बायें नासिका छिद्र से धीरे धीरे मन में एक से चार की गिनती करते हुए श्वास अंदर लें, तत्पश्चात् अनामिका या मध्यमा से बायें नासिका छिद्र को बंद कर दाहिने छिद्र से धीरे धीरे एक से आठ की गिनती करते हुए श्वास बाहर छोड़ें ; पुनः इसी प्रकार गिनते हुए दाहिनी ओर से श्वास लें तथा बायीं ओर से छोड़ें, यह एक आवर्तन हुआ।

आ. इसी प्रकार शेष दो आवर्तन भी करें।

आचमन पात्र के जल से हस्त प्रक्षालन करें।

स्वस्तिवाचनम्

मृगमुद्रा में अक्षत लेकर श्लोक का उच्चारण करें।

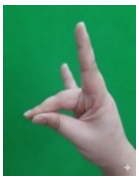

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ १॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं
यज्ञ (गं) समिमं दधातु।
विश्वेदेवाऽस इहमादयन्तामोऽम् प्रतिष्ठ॥ २ ॥

एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते
सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति॥ ३॥

श्री गुरु पादुका पर अक्षत अर्पण करें।

प्रार्थना

नमस्कार मुद्रा में समाहित होकर एकाग्र मन से प्रार्थना करें।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥ १॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेत् श्रृणुयादपि॥ २॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥ ३॥

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥ ४॥

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।

सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ ५ ॥

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ ६ ॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ ७ ॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ॥ ८ ॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥ ९ ॥

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ १० ॥

विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् ।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ शुभं कर्म समारभेत् ॥ ११ ॥

ॐ श्री सद्गुरुचरणकमलेभ्यो नमः ।
श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । उमामहेश्वराभ्यां नमः ।
लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः ।
शचीपुरन्दराभ्यां नमः । इष्टदेवताभ्यो नमः ।
कुलदेवताभ्यो नमः । ग्रामदेवताभ्यो नमः ।
स्थानदेवताभ्यो नमः । वास्तुदेवताभ्यो नमः ।
एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।
सर्वेभ्यो महापुरुषेभ्यो नमो नमः ॥ १२ ॥

सङ्कल्पः

बायें हाथ में जल से भरी आचमनी तथा दाहिने हाथ में एक तुलसीदल पकड़ें।
आचमनी को तुलसीदल पर हलके से स्पर्श करते हुए पकड़कर संकल्प का उच्चारण करें।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बुद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत देशैकदेशे .....क्षेत्रे .....नगरे .....नाम संवत्सरे .....अयने ..... ऋतौ .....मासे .....पक्षे .....पुण्यतिथौ .....वासरे सर्वेषु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थानस्थितेषु .....नाम.....गोत्रोत्पन्नोऽहं /... नाम्नी..... गोत्रोत्पन्नाऽहं सर्वेषां सारस्वतमहाजनानां श्रीगुरुप्रसादसिद्ध्यर्थे यथाज्ञानं यथाशक्ति यथामिलितोपचारैः श्रीगुरुपूजनं करिष्ये।

आचमनी का जल तुलसीदल के ऊपर से आचमन की थाली/प्लेट में छोड़कर तुलसीदल श्री गुरु पादुका पर अर्पण करें।

घण्टापूजनम्

एक बार घंटी बजाकर घंटी, भूमि पर /उसके स्थान पर रखें।
श्लोक का उच्चारण करते हुए बायें हाथ से घंटी पकड़ कर दाहिने हाथ की अनामिका से घंटी पर चंदन, अक्षत एवं पुष्पदल/पंखुड़ी लगाएँ।

ॐ आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टानादं प्रकुर्वीत पश्चाद् घण्टां प्रपूजयेत्॥
ॐ घण्टास्थदेवतायै नमः।
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि॥ नमस्करोमि॥

नमस्कार करें।

वरुणध्यानम्

दाहिने हाथ की अनामिका से चंदन द्वारा भूमि पर चित्रानुसार अष्टदल बनाएँ। (सर्वप्रथम + का चिन्ह फिर x का चिन्ह बनाइये। हाथ धोवें। पूर्व से शुरू कर दक्षिणावर्त दिशा में अनामिका द्वारा कोनों को निरंतर बिना हाथ उठाए जोड़ते हुए पंखुड़ियाँ बनायें)। हस्त प्रक्षालन करें।

ॐ नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥
ॐ वरुणं ध्यायामि, आवाहयामि, पूजयामि।

अष्टदल पर चंदन,अक्षत, पुष्प अर्पण करें। अब शुद्ध जल से भरा कलश इस अष्टदल पर प्रतिष्ठित करें।

नमस्कार करें।

कलशपूजनम्

नीचे दिये हुए श्लोक का उच्चारण करते हुए कलश पर पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर इस क्रम में अनामिका द्वारा चंदन तथा मध्यमा द्वारा कुमकुम लगायें। अक्षत तथा पुष्पदल भी इसी क्रम में लगायें।

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ १॥
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥ २॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशे तु समाश्रिताः॥ ३॥

दाहिनी हथेली से कलश का मुख हलके से बंद रखकर नीचे दिये हुए श्लोक का उच्चारण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः।

अस्मिन्कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् आवाहयामि पूजयामि॥ ४॥

धेनु मुद्रा बनायें और मंत्र का उच्चारण करते हुए कलश के ऊपर दक्षिणावर्त दिशा में (बायीं से दायीं ओर) पाँच बार घुमायें।

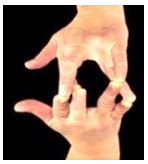

ॐ वं वरुणाय नमः

इसी तरह मत्स्य मुद्रा कलश के ऊपर रखकर केवल अंगूठों को आगे (ऊपर) से स्वयं की ओर (नीचे) पाँच बार घुमायें।

ॐ वं वरुणाय नमः

अंकुश मुद्रा (दाहिनी हथेली की मुट्ठी बाँधकर केवल मध्यमा खोलें) में

श्लोक का उच्चारण करते हुए दाहिने कंधे के पीछे से मुद्रा को
कलश के मुख पर लायें और नीचे दिये हुए श्लोक का उच्चारण
करते हुए पवित्र नदियों / तीर्थों का आवाहन करें।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ ५॥

नीचे दिये हुए मंत्र के साथ पुष्प पर चंदन, अक्षत लगाकर कलश के जल में अर्पण करें।

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। नमस्करोमि॥

नीचे दिये हुए मंत्रों का उच्चारण करते हुए वरुण देवता का आवाहन करें।

ॐ पूर्वे ऋग्वेदाय नमः।
ॐ दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः।
ॐ पश्चिमे सामवेदाय नमः।
ॐ उत्तरे अथर्वणवेदाय नमः।
ॐ कलशमध्ये अपाम्पतये वरुणाय नमः॥ ६॥

नमस्कार करें।

कलशप्रार्थना

कलश के समीप अञ्जलि मुद्रा करें।
श्लोक का उच्चारण करें।

त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा॥
प्रसन्नो भव। वरदो भव।
अनया पूजया वरुणाद्यावाहिता देवताः प्रीयन्तां न मम।

नमस्कार करें।

अब कलश उसके स्थान से न हिलायें।

एक अन्य आचमन पात्र लें। कलश से चार आचमनी अभिमंत्रित जल इस आचमन पात्र के जल में

*डालें। **अब आगे की पूजन विधि में श्री गुरु पादुका के लिए केवल इसी अभिमंत्रित जल का उपयोग करें।** आचमनी से थोड़ा अभिमंत्रित जल स्नान पात्र में भी डालें।*

शङ्खपूजनम्

थोड़ा अभिमंत्रित जल शंख में डालकर शंख धोवें।

चार आचमनी अभिमन्त्रित जल शंख में भरकर शंख शंखदानी (स्टॅण्ड) पर रखें।

पुष्प, चंदन, अक्षत मृगमुद्रा में लेकर मंत्र का उच्चारण करें।

ॐ शं पाञ्चजन्याय नमः।
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

शङ्ख पर पुष्प, चंदन, अक्षत अर्पण करें।

नमस्करोमि ॥

नमस्कार करें।

प्रोक्षणम्

दाहिनी हथेली पर एक तुलसी दल रखकर बायें हाथ से शंख का थोड़ा जल तुलसी दल पर डालें। शंख को उसके नियत स्थान पर रख दें।

दाहिनी मुट्ठी को हलके से बंदकर, पूजा सामग्री पर मन ही मन इष्ट मंत्र / ॐ नमः शिवाय का जप करते हुए मुट्ठी के जल से प्रोक्षण करें।

आत्मप्रोक्षणम्

इसी तुलसी दल को बायीं हथेली पर रखकर दाहिने हाथ से शंख का थोड़ा जल तुलसीदल पर डालें। दाहिने हाथ की मृग मुद्रा द्वारा तुलसी दल पकड़ें।

श्लोक का उच्चारण करते हुए तुलसी दल द्वारा बायीं ओर नीचे, ऊपर, वैसे ही दाहिनी ओर ऊपर, नीचे इस क्रम में आत्म प्रोक्षण करें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

शेष जल के साथ तुलसी दल को थाली (प्लेट) में डाल दें।

आसनशुध्दिः

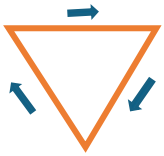

आसन के दाहिने, अग्र कोने को थोड़ा ऊपर उठायें।
दाहिनी अनामिका में चंदन/गंध लगाकर चित्रानुसार दर्शाई दिशा में
हाथ उठाए बिना भूमि पर त्रिकोण बनायें।
हस्त प्रक्षालन करें।
गंध /चंदन, अक्षत, पुष्प दल त्रिकोण पर समर्पित करें।
दाहिने हाथ की अनामिका और मध्यमा को त्रिकोण के बीच में रखें, बायें हाथ से दाहिनी कोहनी को स्पर्श करते हुए श्लोक का उच्चारण करें।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥ १॥

ॐ आधारशक्तये नमः। ॐ कूर्मासनाय नमः।
ॐ अनन्तासनाय नमः। ॐ विमलासनाय नमः।
ॐ आत्मासनाय नमः॥ २॥

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। नमस्करोमि॥

नमस्कार करें एवं हस्त प्रक्षालन करें।

दिग्बन्धः

मस्तक से थोड़ा ऊपर चित्रानुसार त्रिशूल मुद्रा बनाकर कलाई का उपयोग करते हुए दक्षिणावर्त (बायीं से दायीं ओर) चारों दिशाओं में तीन बार मुद्रा घुमाते हुए नीचे दिये हुए श्लोक का उच्चारण करें।

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

श्लोक के अंत में मुद्रा से सामने की ओर एक झटका दें।

दीपकपूजनम्

पुष्प में गंध, अक्षत लगाकर उसे मृग मुद्रा में पकड़े हुए श्लोक का उच्चारण करें।

दीपो ज्योतिः परब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दनः।
दीपो हरतु मे ध्वान्तं संविद्दीप नमोऽस्तु ते॥
ॐ दीपदेवतायै नमः।
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

चौरंग (चौकी) के ऊपर रखे हुए प्रज्ज्वलित प्रधान दीपक को पुष्प, गंध, अक्षत अर्पण करें।

नमस्करोमि ॥

नमस्कार करें।

भैरवनमस्कार:

पुष्प में गंध, अक्षत लगाकर उसे मृग मुद्रा में पकड़े हुए श्लोक का उच्चारण करें।

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि॥
ॐ भं भैरवाय नमः।
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

यह पुष्प चौरंग/चौकी पर घंटी की बाईं ओर अर्पित करें।

नमस्करोमि॥

नमस्कार करें।

श्रीगुरुपूजनम्

ध्यानम्

दाहिने हाथ की मृग मुद्रा में पुष्प लेकर श्लोक का उच्चारण करें।

द्विदलकमलमध्ये बद्धसंवित्सुमुद्रं
धृतशिवमयगात्रं साधकानुग्रहार्थम्।
श्रुतिशिरसिविभान्तं बोधमार्तण्डमूर्तिं
शमिततिमिरशोकं श्रीगुरुं भावयामि॥ १॥
हृदम्बुजे कर्णिकमध्यसंस्थं सिंहासने संस्थितदिव्यमूर्तिम्।
ध्यायेद्गुरुं चन्द्रकलाप्रकाशं चित्पुस्तकाभीष्टवरं दधानम्॥ २॥
ॐ श्री गुरुपादुकाभ्यो नमः। ध्यानं समर्पयामि॥

श्री गुरु पादुका पर पुष्प अर्पण करें।

आवाहनम्

दाहिने हाथ की मृग मुद्रा में अक्षत लेकर मंत्र का उच्चारण करें।

ॐ स्वरूपनिरूपणहेतवे श्रीगुरवे नमः।
ॐ स्वच्छप्रकाशविमर्शहेतवे श्रीपरमगुरवे नमः।
ॐ स्वात्मारामपञ्जरविलीनतेजसे श्रीपरमेष्ठिगुरवे नमः।
ॐ श्रीगुरुपादुकाभ्यो नमः। आवाहयामि, पूजयामि॥

श्री गुरु पादुका पर अक्षत अर्पण करें।

आसनम्

दाहिने हाथ की मृग मुद्रा में पुष्प लें। श्लोक का उच्चारण करें।

सर्वात्मभावसंस्थाय गुरवे सर्वसाक्षिणे।
सहस्रारसरोजातमासनं कल्पयाम्यहम्॥
ॐ श्रीगुरुपादुकाभ्यो नमः। आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि॥

श्री गुरु पादुका पर पुष्प अर्पण करें।

पाद्यम्

श्लोक का उच्चारण करें।

चलाचलनिकेताय चार्पितं पाद्यमुत्तमम्।
सर्वधर्मपरित्यागं शरणागतितीर्थजम्॥
ॐ श्रीगुरुपादुकाभ्यो नमः। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥

आचमनी से दो बार अभिमन्त्रित जल श्री गुरु पादुका पर अर्पण करें।

अर्घ्यम्

आचमनी में अभिमन्त्रित जल भरकर आचमनी को आचमन पात्र पर रखें। आचमनी के जल में गन्ध, अक्षत, पुष्प डालकर, आचमनी दाहिने हाथ में पकड़े हुए श्लोक का उच्चारण करें।

अनन्यभक्तिसलिलं विनेयगुणमण्डितम्।
अर्घ्यं तेऽनर्घ्यकैवल्यनाथाय परिकल्पितम्।
ॐ श्रीगुरुपादुकाभ्यो नमः। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि॥

श्री गुरु पादुका पर आचमनी द्वारा जल सहित गंध,अक्षत, पुष्प अर्पण करें।

आचमनम्

श्लोक का उच्चारण करते हुए आचमनी से तीन बार अभिमंत्रित जल श्री गुरु पादुका पर अर्पण करें और एक आचमनी अभिमंत्रित जल तीर्थ पात्र में डालें।

मनोवाक्कायकर्माख्यं दत्तं ते निर्मलं जलम्।
गृहीत्वा गुरुराजेन्द्र कुरुष्वाचमनं विभो।
ॐ श्रीगुरुपादुकाभ्यो नमः। आचमनीयं जलं समर्पयामि॥

स्नानम्

कलश से एक आचमनी अभिमंत्रित जल लेकर स्नान पात्र में डालें।
सावधानीपूर्वक श्री गुरु पादुका पर अर्पित किये गए पुष्प एकत्रित कर निर्माल्य पात्र में डालें। हस्त प्रक्षालन करें।
श्लोक का उच्चारण करते हुए, स्नानपात्र के संपूर्ण अभिमंत्रित जल से श्री गुरु पादुका का अभिषेक करें।

सर्वशास्त्रमयं तोयं सदानिर्मुक्तकल्मष।
श्रद्धानद्यास्समानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।
ॐ श्रीगुरुपादुकाभ्यो नमः। स्नानीयं जलम् अभिषेकं च समर्पयामि॥
स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि॥

तत्पश्चात् रिक्त स्नानपात्र नियत स्थान पर रखें।
एक आचमनी अभिमंत्रित जल लेकर तीर्थ पात्र में डालें।
सोमसूत्र/अभिषेक की थाली (प्लेट) में अर्पित अभिषेक के जल से अनामिका एवं मध्यमा द्वारा एक बार आत्म प्रोक्षण करें।
हस्त प्रक्षालन करें।
बायीं हथेली में एक स्वच्छ रुमाल/तौलिया लेकर उस पर श्री गुरु पादुका रखकर उसे अच्छी तरह से पोंछें।

श्री गुरु पादुका पर चंदन लगाएँ।
सोमसूत्र/अभिषेक की थाली (प्लेट) के पूरे जल को तीर्थ पात्र में डालें तथा सोमसूत्र/अभिषेक की थाली (प्लेट)को एक ओर रख दें।
पुष्पों से सजी थाली (प्लेट) चौरंग / चौकी पर रखें।
दाहिने हाथ से श्री गुरु पादुका इस थाली में स्थापित करें।

वस्त्रम्

दाहिने हाथ से मृग मुद्रा में अक्षत लेकर श्लोक का उच्चारण करते हुए श्री गुरु पादुका पर अक्षत अर्पण करें।

मायाचित्रपटाच्छन्ननिजगुह्योरुतेजसे।
मम श्रद्धाभक्तिवासयुग्मं देशिक गृह्यताम्।
ॐ श्रीगुरुपादुकाभ्यो नमः। वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि॥
तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि॥

एक आचमनी अभिमंत्रित जल तीर्थपात्र में डालें।

चन्दन-अक्षता:

श्लोक का उच्चारण करते हुए श्री गुरु पादुका के अँगूठों पर चन्दन लगाएँ।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥ १॥
महावाक्योत्थविज्ञान-गन्धाढ्यं तापमोचनम्।
विलेपनं गुरुश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥ २॥
ॐ श्रीगुरुपादुकाभ्यो नमः। चन्दनम् अक्षतान् च समर्पयामि॥

अक्षत अर्पण करें।

पुष्पम्

दाहिने हाथ से मृग मुद्रा में पुष्प लें।

श्लोक का उच्चारण करते हुए श्री गुरु पादुका पर पुष्प अर्पण करें।

तुरीयवनसम्भूतं दिव्यभावमनोहरम्।
तारादिमनुपुष्पालिं गृहाण गुरुनायक॥
ॐ श्रीगुरुपादुकाभ्यो नमः। पुष्पं समर्पयामि॥

बिल्वपत्रम्

अभिमंत्रित जल द्वारा एक बिल्वपत्र धोकर दाहिने हाथ में पकड़कर श्लोक का उच्चारण करें।

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम्।
त्रिजन्मपाप-संहारमेकबिल्वं शिवार्पणम्॥
ॐ श्रीगुरुपादुकाभ्यो नमः। बिल्वपत्रं समर्पयामि॥

बिल्वपत्र का पृष्ठ / खुरदुरा भाग ऊपर की तरफ और डंठल स्वयं की ओर रखते हुए श्री गुरु पादुका पर अर्पण करें।

श्रीगुरु-अष्टोत्तरशतनामावल्या सहितः बिल्वार्चने/पुष्पार्चने विनियोगः

अष्टोत्तरशतनामावलि के प्रत्येक "नमः" पर श्री गुरु पादुका पर एक बिल्वपत्र / पुष्पदल अर्पण करें।

श्रीगुरु-अष्टोत्तरशतनामावलिः

ॐ सद्गुरवे नमः।
ॐ अज्ञाननाशकाय नमः।
ॐ अदम्भिने नमः।
ॐ अद्वैतप्रकाशकाय नमः।
ॐ अनपेक्षाय नमः।
ॐ अनसूयवे नमः।
ॐ अनुपमाय नमः।
ॐ अभयप्रदात्रे नमः ।
ॐ अमानिने नमः ।
ॐ अहिंसामूर्तये नमः। (१०)
ॐ अहैतुकदयासिन्धवे नमः।
ॐ अहङ्कारनाशकाय नमः।
ॐ अहङ्कारवर्जिताय नमः।
ॐ आचार्येन्द्राय नमः।
ॐ आत्मसन्तुष्टाय नमः।
ॐ आनन्दमूर्तये नमः।
ॐ आर्जवयुक्ताय नमः।
ॐ उचितवाचे नमः।
ॐ उत्साहिने नमः।
ॐ उदासीनाय नमः। (२०)
ॐ उपरताय नमः।
ॐ ऐश्वर्ययुक्ताय नमः।
ॐ कृतकृत्याय नमः।
ॐ क्षमावते नमः।

ॐ गुणातीताय नमः।
ॐ चारुवाग्विलासाय नमः।
ॐ चारुहासाय नमः।
ॐ छिन्नसंशयाय नमः।
ॐ ज्ञानदात्रे नमः।
ॐ ज्ञानयज्ञतत्पराय नमः। (३०)
ॐ तत्त्वदर्शिने नमः।
ॐ तपस्विने नमः।
ॐ तापहराय नमः।
ॐ तुल्यनिन्दास्तुतये नमः।
ॐ तुल्यप्रियाप्रियाय नमः।
ॐ तुल्यमानापमानाय नमः।
ॐ तेजस्विने नमः।
ॐ त्यक्तसर्वपरिग्रहाय नमः।
ॐ त्यागिने नमः।
ॐ दक्षाय नमः। (४०)
ॐ दान्ताय नमः।
ॐ दृढव्रताय नमः।
ॐ दोषवर्जिताय नमः।
ॐ द्वन्द्वातीताय नमः।
ॐ धीमते नमः।
ॐ धीराय नमः।
ॐ नित्यसन्तुष्टाय नमः।
ॐ निरहङ्काराय नमः।
ॐ निराश्रयाय नमः।
ॐ निर्भयाय नमः। (५०)
ॐ निर्मदाय नमः।
ॐ निर्ममाय नमः।

ॐ निर्मलाय नमः।
ॐ निर्मोहाय नमः।
ॐ निर्योगक्षेमाय नमः।
ॐ निर्लोभाय नमः।
ॐ निष्कामाय नमः।
ॐ निष्क्रोधाय नमः।
ॐ निस्सङ्गाय नमः।
ॐ परमसुखदाय नमः। (६०)
ॐ पण्डिताय नमः।
ॐ पूर्णाय नमः।
ॐ प्रमाणप्रवर्तकाय नमः।
ॐ प्रियभाषिणे नमः।
ॐ ब्रह्मकर्मसमाधये नमः।
ॐ ब्रह्मात्मनिष्ठाय नमः।
ॐ ब्रह्मात्मविदे नमः।
ॐ भक्ताय नमः।
ॐ भवरोगहराय नमः।
ॐ भुक्तिमुक्तिप्रदात्रे नमः। (७०)
ॐ मङ्गलकर्त्रे नमः।
ॐ मधुरभाषिणे नमः।
ॐ महात्मने नमः।
ॐ महावाक्योपदेशकर्त्रे नमः।
ॐ मितभाषिणे नमः।
ॐ मुक्ताय नमः।
ॐ मौनिने नमः।
ॐ यतचित्ताय नमः।
ॐ यतये नमः।
ॐ यदृच्छालाभसन्तुष्टाय नमः। (८०)

ॐ युक्ताय नमः।
ॐ रागद्वेषवर्जिताय नमः।
ॐ विदिताखिलशास्त्राय नमः।
ॐ विद्याविनयसम्पन्नाय नमः।
ॐ विमत्सराय नमः।
ॐ विवेकिने नमः।
ॐ विशालहृदयाय नमः।
ॐ व्यवसायिने नमः।
ॐ शरणागतवत्सलाय नमः।
ॐ शान्ताय नमः। (९०)
ॐ शुद्धमानसाय नमः।
ॐ शिष्यप्रियाय नमः।
ॐ श्रद्धावते नमः।
ॐ श्रोत्रियाय नमः।
ॐ सत्यवाचे नमः।
ॐ सदामुदितवदनाय नमः।
ॐ समचित्ताय नमः।
ॐ समानाधिकवर्जिताय नमः।
ॐ समाहितचित्ताय नमः।
ॐ सर्वभूतहिताय नमः। (१००)
ॐ सिद्धाय नमः।
ॐ सुलभाय नमः।
ॐ सुशीलाय नमः।
ॐ सुहृदे नमः।
ॐ सूक्ष्मबुद्धये नमः।
ॐ सङ्कल्पवर्जिताय नमः।
ॐ सम्प्रदायविदे नमः।
ॐ स्वतन्त्राय नमः। (१०८)

अष्टोत्तरशतनामावलि के अंत में श्री गुरु पादुका पर समर्पित थोड़े पुष्पदल / बिल्वपत्र सतर्कता से उठाकर निर्माल्य पात्र में डालें, ताकि श्री गुरु पादुका पर आगे की विधि करने में सहजता हो, पर ध्यान रहे, गुरुपादुका न हिलायें।

हस्त प्रक्षालन करें।

धूपः

माचिस की तीली द्वारा अगरबत्ती / धूप प्रज्वलित करें।
बायें हाथ से घंटी बजाते हुए एवं नीचे दिये हुए श्लोक का उच्चारण करते हुए श्री गुरु पादुका को अगरबत्ती/धूप दिखाएँ (चित्र में दर्शाई गई दिशा के अनुसार)

पञ्चकोशमयं दिव्यं दशाङ्गं गुग्गुलं गुरो।
दग्ध्वा ज्ञानाग्निना नाथ धूपमाघ्रापयामि ते॥
ॐ श्रीगुरुपादुकाभ्यो नमः। धूपम् आघ्रापयामि॥

दीपः

श्लोक उच्चारण के पूर्व माचिस की तीली द्वारा घी का दीपक प्रज्वलित करें।
बायें हाथ से घंटी बजाते हुए, दाहिने हाथ में दीपक लेकर, नीचे दिये हुए श्लोक का उच्चारण करते हुए श्री गुरु पादुका को दीपक दिखाएँ (चित्र में दर्शाई गई दिशा के अनुसार)

वैराग्यतैलसम्पूर्णे भक्तिवर्तिसमन्विते।
विवेकपूर्णपात्रेऽहं बोधदीपं प्रदर्शये॥
ॐ श्रीगुरुपादुकाभ्यो नमः। दीपं दर्शयामि॥

दीप-दर्शन के तुरंत पश्चात् निर्माल्य (पुष्प) द्वारा दीप बुझायें (फूँक ना मारें)।

नैवेद्यम्

नमस्कार करें।
हस्त प्रक्षालन करें। अनामिका पर चंदन लगाकर भूमि पर स्वस्तिक
का चिन्ह बनाएँ। हस्त प्रक्षालन करें। नैवेद्य पात्र में नैवेद्य रखकर, पात्र स्वस्तिक पर रखें।
दाहिने हाथ में कुछ तुलसी दल लेकर उन्हें अभिमंत्रित जल से धोवें।
तुलसी दल को दाहिनी हथेली पर रखकर उन पर थोड़ा अभिमंत्रित जल डालें।

मंत्र का उच्चारण करें।

हस्तौ प्रक्षाल्य नैवेद्यं पुरतः स्थाप्य गायत्र्या सम्प्रोक्ष्य तुलसीदलैः आच्छाद्य नैवेद्यम्।

दाहिने हाथ पर बायाँ हाथ रखकर धेनुमुद्रा बनाएँ।

धेनुमुद्रा में ही कलाई का उपयोग कर नीचे दिये हुए मंत्र का उच्चारण करते हुए मुद्रा को तीन बार नैवेद्य पात्र के ऊपर घुमायें।

ॐ महापुरुषाय विद्महे परमहंसाय धीमहि।
तन्नो गुरुः प्रचोदयात्॥ १॥

दाहिनी हथेली को हलके से बंदकर (हलकी मुठ्ठी) तुलसी दल द्वारा नैवेद्य पर प्रोक्षण करें (जल छिड़कें)।

एक तुलसीदल नैवेद्य में डालें।
फिर सभी तुलसीदल बायीं हथेली पर रखें।
नीचे दिये हुए मंत्रों का क्रम से उच्चारण करें। प्रत्येक स्वाहा पर एक-एक तुलसीदल श्री गुरु पादुका पर अर्पण करें। (कुल ५ बार)
अंतिम मंत्र ('ॐ प्राण-अपान-व्यान-उदान-समानाः') का उच्चारण करते समय पाँचों अंगुलियों की ग्रास-मुद्रा नैवेद्य की ओर से श्री गुरु पादुका की ओर करें।

ॐ प्राणाय स्वाहा
ॐ अपानाय स्वाहा
ॐ व्यानाय स्वाहा
ॐ उदानाय स्वाहा
ॐ समानाय स्वाहा
ॐ प्राण-अपान-व्यान-उदान-समानाः॥ २॥
ॐ श्रीगुरुपादुकाभ्यो नमः। आचमनीयं समर्पयामि॥

नमस्कार करें।

एक आचमनी अभिमंत्रित जल तीर्थ पात्र में डालें।
नीचे दिये हुए मंत्र का उच्चारण करते हुए एक आचमनी अभिमंत्रित जल नैवेद्य पर डालें।

पूर्वापोषणं समर्पयामि।

नीचे दिये हुए श्लोक का उच्चारण करें।

ॐ ब्रह्मनिष्ठाय नैवेद्यं ब्रह्माण्डाख्यं महौदनम्।
समाधिपक्वमधुरं शिवाय गुरवेऽर्पितम्॥ ३॥
ॐ श्रीगुरुपादुकाभ्यो नमः।
नैवेद्यं निवेदयामि नानाऋतुफलानि च समर्पयामि॥

नमस्कार करें।
एक मिनट आँखें मूँद कर ध्यान मुद्रा में बैठें। फिर एक बार घंटी बजाएं। क्रम से नीचे दिये हुए मंत्रों का उच्चारण करें।

आचमनीयं जलं समर्पयामि।

एक आचमनी अभिमंत्रित जल तीर्थपात्र में डालें।

उत्तरापोषणं समर्पयामि।

एक आचमनी अभिमंत्रित जल नैवेद्य पर डालें।

मुखप्रक्षालनं समर्पयामि।

एक आचमनी अभिमंत्रित जल तीर्थ पात्र में डालें।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि।

एक आचमनी अभिमंत्रित जल तीर्थ पात्र में डालें।
नीचे दिये हुए मंत्र का उच्चारण करते हुए दोनों अनामिका पर चंदन लगाकर दाहिनी कलाई को बायीं कलाई पर रखते हुए अंगूठे द्वारा एक हलके झटके से चंदन श्री गुरु पादुका पर छिड़कें।

करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल-दक्षिणा

श्लोक का उच्चारण करते हुए एक आचमनी अभिमंत्रित जल पान-सुपारी एवं दक्षिणा के ऊपर डालें।

जीवब्रह्मैक्यविज्ञान-तृप्ताय गुरुमूर्तये।
जीवन्मुक्तिसुखाकारं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ श्रीगुरुपादुकाभ्यो नमः। सदक्षिणा-ताम्बूलं समर्पयामि॥

नीराजनम्

श्लोक उच्चारण के पहले मंगलआरती, कपूर के साथ प्रज्वलित करें।
नीचे दिये हुए श्लोकों का उच्चारण करते हुए, बायें हाथ से घंटी बजाते हुए, दाहिने हाथ से आरती दक्षिणावर्त दिशा में (बायीं से दायीं ओर) घुमाते हुए करें।

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि॥ १॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव॥ २॥

नीराजनं निर्मलदीप्तिमद्भिर्दीपाङ्कुरैरुज्ज्वलमुच्छ्रितैश्च।
घण्टानिनादेन समर्पयामि मृत्युञ्जयाय गुरुनायकाय॥ ३॥

ॐ श्रीगुरुपादुकाभ्यो नमः। नीराजनं दर्शयामि।

तत्पश्चात् घंटी को फिर से उसके नियत स्थान पर रखकर उसकी भी एक बार आरती करें।
अब बायें हाथ से आरती पकड़ें।

जल आरती

दाहिने हाथ से दक्षिणावर्त दिशा में शंख तीन बार घुमाकर मंत्र का उच्चारण करते हुए श्री गुरु पादुका की जल-आरती करें।

ॐ श्रीगुरुपादुकाभ्यो नमः। तदन्ते जलारार्तिकं समर्पयामि॥

शंख के जल को तीर्थ पात्र में डालकर शंख को उसके नियत स्थान पर रखें।
नीचे दिये हुए मंत्र का उच्चारण करते हुए, दाहिनी हथेली को आरती के ऊपर से घुमाते हुए श्री गुरु पादुका की ओर दर्शावें।

देवाभिवन्दनम्।

फिर नीचे दिये हुए मंत्र का उच्चारण करते हुए स्वयं भी आरती लेवें।

आत्माभिवन्दनम्।

हस्त प्रक्षालन करें।

मन्त्रपुष्पाञ्जलिः

अंजलि मुद्रा में पुष्प लेकर श्री गुरु पादुका के समक्ष मुद्रा दर्शावें। श्लोक का उच्चारण करते हुए अंजलि मुद्रा से श्री गुरु पादुका पर पुष्प अर्पण करें।

नानासुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिं मया दत्तं गृहाण गुरुनायक॥
ॐ श्रीगुरुपादुकाभ्यो नमः। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि॥

प्रदक्षिणा

नमस्कार मुद्रा में श्लोक का उच्चारण करते हुए कलाई के उपयोग से दक्षिणावर्त दिशा में बायीं से दायीं ओर नमस्कार मुद्रा तीन बार घुमायें।

परिभ्रमन्ति ब्रह्माण्डकोटयः यस्य सम्पदे।
तस्य श्रीगुरुनाथस्य संविद्-दृष्ट्या प्रदक्षिणम्॥
ॐ श्रीगुरुपादुकाभ्यो नमः। प्रदक्षिणां समर्पयामि॥

नमस्कार-प्रार्थना-स्तुतिः

नमस्कार मुद्रा के साथ श्लोकों का उच्चारण करें।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥ १॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥ २॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुस्साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ३ ॥

श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयं करुणालयम् ।
नमामि भगवत्पादं शङ्करँल्लोकशङ्करम् ॥ ४ ॥

शङ्करं शङ्कराचार्यं केशवं बादरायणम् ।
सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः ॥ ५ ॥

ईश्वरो गुरुरात्मेति मूर्तिभेदविभागिने ।
व्योमवद्व्याप्तदेहाय दक्षिणामूर्तये नमः ॥ ६ ॥

ॐ श्रीगुरुपादुकाभ्यो नमः । नमस्करोमि ।
प्रार्थनां स्तुतिं च समर्पयामि ॥

विशेषार्घ्यम्

आचमनी में अभिमंत्रित जल भरकर उसे आचमन पात्र पर रखें।
आचमनी के जल में गंध, अक्षत, पुष्पदल डालें।
दाहिने हाथ में जल से भरी आचमनी पकड़े हुए श्लोक का उच्चारण करें।

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं
द्वंन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥

श्लोक के अंत में आचमनी श्री गुरु पादुका के समक्ष दक्षिणावर्त दिशा में बायीं से दायीं ओर तीन बार घुमाकर जल तीर्थ पात्र में छोड़ दें।

ॐ श्रीगुरुपादुकाभ्यो नमः । विशेषार्घ्यं समर्पयामि ॥

प्रार्थनापूर्वकं क्षमापनम्

नमस्कार मुद्रा के साथ श्लोक का उच्चारण करें।

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व गुरुपुङ्गव॥
ॐ श्रीगुरुपादकाभ्यो नमः। प्रार्थनापूर्वकं क्षमां याचे॥

समर्पणम्

बायें हाथ में आचमनी में अभिमंत्रित जल तथा दाहिने हाथ में तुलसी दल लेकर आचमनी को हलके से तुलसी दल पर स्पर्श करते हुए पकड़ें। श्लोक का उच्चारण करें।

देवनाथ गुरो स्वामिन् देशिक स्वात्मनायक।
त्राहि त्राहि कृपासिन्धो पूजां पूर्णतरां कुरु॥ १॥
अनया पूजया श्रीगुरुः प्रीयताम्।
ॐ तत् सत् ब्रह्मार्पणमस्तु॥ २॥

तुलसी दल के ऊपर से आचमनी का जल तीर्थ पात्र में छोड़ें। तुलसीदल श्री गुरु पादुका पर अर्पण करें।
नीचे दिये हुए श्लोक का उच्चारण करते हुए दाहिनी अनामिका एवं मध्यमा द्वारा श्री गुरु पादुका का स्पर्श करें। फिर वही अनामिका एवं मध्यमा स्वयं के अनाहत चक्र पर रखें।

तिष्ठ तिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवाः सर्वे तिष्ठन्ति मे हृदि॥

नमस्कार करें।

जपः

इष्टमंत्र जप / ॐ नमः शिवाय का जप तीन मिनट तक करें। जप के अंत में नमस्कार करें। स्वयं के इष्ट देव/ देवी के अनुसार नीचे दिये हुए किसी एक श्लोक के उच्चारण के पश्चात् एक आचमनी जल दाहिने हाथ की अनामिका एवं मध्यमा के ऊपर से थाली में छोड़कर जप अर्पण करें।

(देवीश्लोकः) - गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

(देवश्लोकः) - गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर॥

ॐ नमः पार्वतीपतये हर हर महादेव *का घोष करें।*

तीर्थ, पुष्प, प्रसाद का वितरण करें एवं स्वयं भी ग्रहण करें।

श्रीशिवपूजनम्

श्रीभवानीशङ्करः

॥ ॐ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री भवानीशङ्कराय नमः ॥ श्री मात्रे नमः ॥

श्री शिव पूजन हेतु आवश्यक सामग्री

पूजा - द्रव्य / पात्र / वस्तु	पूजा - सामग्री
श्री गुरु पादुका	पुष्प / पुष्पदल (फूलों की पंखुड़ियाँ)
सोमसूत्र/थाली (प्लेट) श्री गुरु पादुका के लिए	गंध (चंदन)
चौरंग / चौकी	अक्षत
आसन, स्वयं की जपमाला (गोमुख में)	कुमकुम (रोली)
कलश	बिल्वपत्र (बेलपत्ती)
स्नान-पात्र	तुलसी
दो आचमन-पात्र	कपूर
तीर्थ-पात्र	अगरबत्ती / धूप
फूलों से सजी थाली (प्लेट) एवं पूजा सामग्री रखने के लिए अन्य थाली	बाती
तेल का दिया / दीपक	नैवेद्य
घी का दिया / दीपक	पान-सुपारी
नैवेद्य आरती (एक बाती वाली घी की आरती), कपूर आरती, नीराजन के लिये पाँच दियों वाली आरती	दक्षिणा
अगरबत्ती / धूपदानी (स्टॅण्ड)	माचिस
शंख (शंखदानी(स्टॅण्ड) सहित)	शुद्ध जल
स्वच्छ तौलिया / रुमाल (दो – एक पादुका के लिए, एक स्वयं के लिए)	
घंटी	
निर्माल्य पात्र	
बुझी माचिस तीलियों के लिये पात्र	

सामान्य निर्देश

१. शिवलिंग की बजाय चांदी की छोटी सी श्री गुरु पादुका का उपयोग श्री शिव पूजन में किया जा सकता है।

२. पूजन विधि में उपयोग में आने वाले सभी पात्र ताँबे, पीतल या चाँदी के हों। परंतु बड़ी थाली, निर्माल्य पात्र स्टील के हो सकते हैं।

३. स्वच्छ चौरंग / चौकी पर एक सोमसूत्र/थाली/प्लेट में श्री गुरु पादुका स्थापित करें।

४. प्रधान दीपक (जो पूजा के आरंभ से समापन तक प्रज्वलित रहेगा), एक अन्य दीपक (पूजन विधि के लिये), धूप एवं नीराजन (आरती) के लिये निर्देश -

- प्रधान दीपक - इसमें तेल भरकर दो बाती आपस में पिरोकर इसमें रखें। बाती के सिरे पर शीघ्र प्रज्वलन हेतु थोड़ा कपूर लगा सकते हैं।
- अन्य दीपक - दो बाती आपस में पिरोकर घी में डुबोकर इसमें रखें। बाती के सिरे पर शीघ्र प्रज्वलन हेतु थोड़ा कपूर लगा सकते हैं।
- धूप - केवल एक ही धूप/अगरबत्ती को स्टॅण्ड/धूपदानी में लगाकर प्रज्वलन हेतु तैयार रखें।
- नीराजन (आरती) - एक-आरती के लिये, दो बाती आपस में पिरोकर, घी में डुबोकर इसमें रखें। साथ ही एक टुकड़ा कपूर, अक्षत एवं कुमकुम नीराजन के हत्थे पर रखें।

५. संकल्प के लिए पूजन के क्षेत्र, नगर, संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, दिवस (वार/दिन), नाम एवं गोत्र की जानकारी तैयार रखें।

६. चंदन, अक्षत, पुष्प अर्पण करते समय मृग मुद्रा का उपयोग करें। तर्जनी तथा कनिष्ठिका का उपयोग पूजन में वर्ज्य है।

७. कलश पूजन के पश्चात् उसे नियत स्थान से न हिलायें।

८. आसन -

- प्रधान दीपक प्रज्वलित करने से पहले स्वयं के बैठने के लिये आसन पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख होकर बैठने हेतु उचित स्थान पर फैलाकर रखें।
- आसन पर पैर न रखें।
- पूजा समापन के पश्चात् तुरंत आसन तहाकर यथास्थान रखें।

९. चौरंग/चौकी पर रखे प्रधान दीपक की लौ का उपयोग धूप/अगरबत्ती या अन्य दीपक प्रज्वलित करने के लिये न करें।

१०. श्री गुरु पादुका को स्नान कराने के पश्चात् श्री गुरु पादुका पर जल अर्पण न करें।

११. हस्त प्रक्षालन(हाथ धोवें) -

- हाथ धोने के लिये स्वयं के नित्य उपयोग में लेने वाले आचमन पात्र का ही उपयोग करें।
- पूजन के दौरान भूमि अथवा शरीर का स्पर्श होने पर हस्त प्रक्षालन करें (हाथ धोवें)।
- किसी अन्य वस्तु का, जो अभिमंत्रित न हो, स्पर्श होने पर हाथ धोवें।
- आरती लेने के पश्चात् हस्त प्रक्षालन करें (हाथ धोवें)।
- निर्माल्य स्पर्श करने के पश्चात् हस्त प्रक्षालन करें (हाथ धोवें)। (निर्माल्य को पात्र में डालते समय उसे न सूंघें)

१२. यदि छोटे बच्चे पूजन कर रहे हैं, तब उनके माता-पिता दीप, धूप प्रज्वलित करने के लिये उनकी सहायता करें। उनके हाथ में माचिस न दें।

१३. पूजन के पूर्व कलश, स्नानपात्र तथा आचमन पात्र में शुद्ध जल भरें।

१४. पूजन प्रारंभ करने के पूर्व प्रधान दीपक प्रज्वलित करें।

१५. श्री गुरु का ध्यान कर, उन्हें प्रणाम कर पूजन प्रारंभ करें।

१६. पूजन विधि समापन के पश्चात् पूजा स्थान स्वच्छ करें ताकि पूजा में उपयोग की हुई किसी भी वस्तु पर आपका पैर न पड़े।

पूजा सामग्री का सज्जीकरण (व्यवस्था)

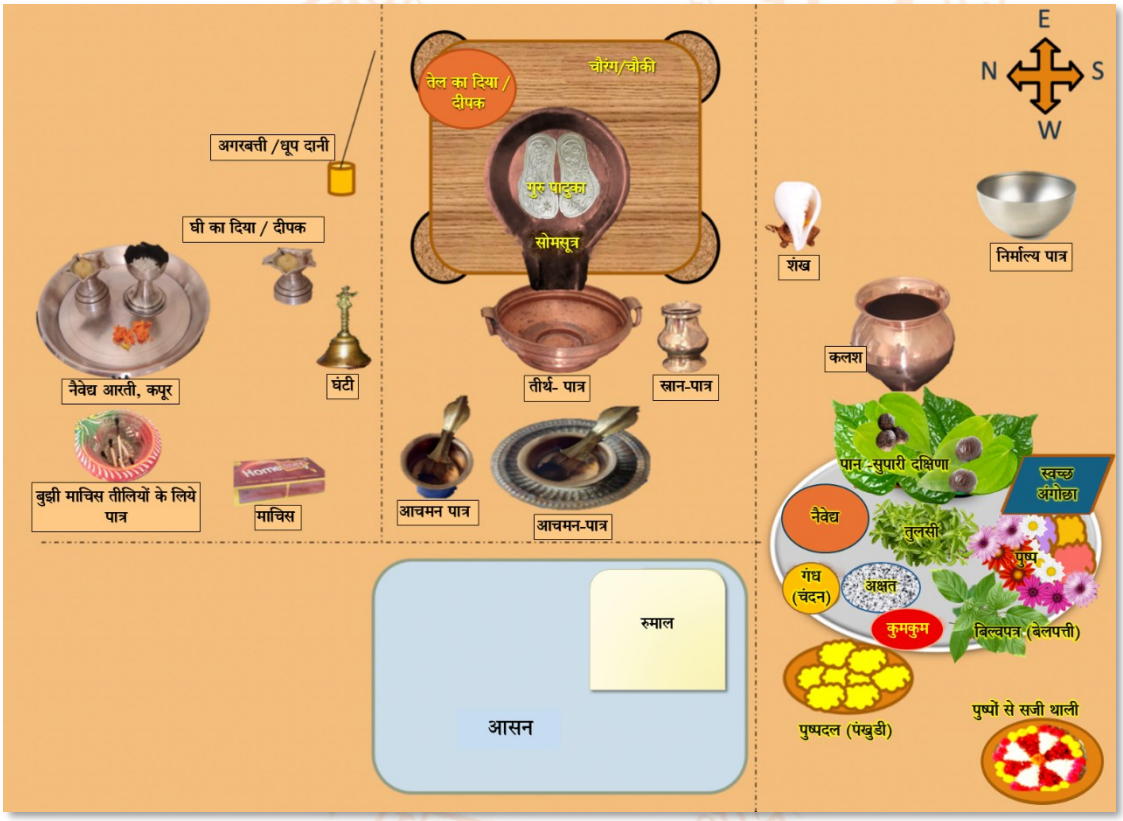

पूजा-पूर्वाङ्गम्

आचमनम्

नीचे दिये हुए प्रत्येक मंत्र का क्रम से एक बार उच्चारण करें। प्रथम तीन मंत्रों के उच्चारण में प्रत्येक स्वाहा के पश्चात् अपने आचमन पात्र से एक चम्मच जल ग्रहण करें। चतुर्थ (अंतिम) स्वाहा पर आचमनी द्वारा एक आचमनी जल दाहिनी हथेली की मध्यमा और अनामिका के ऊपर से आचमन पात्र की थाली (प्लेट) में छोड़ें।

ॐ ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ क्लीं शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।

स्वयं के आचमन पात्र के जल से हस्त प्रक्षालन करें।

प्राणायामः

मन को समाहित (एकाग्र) करने के लिए अनुलोम-विलोम प्राणायाम के १:२ के अनुपात में तीन आवर्तन करें। (१:२ अनुपात अर्थात् श्वास(सांस) लेते समय मन में एक से चार तक गिनें तथा (सांस) श्वास छोड़ते समय मन में एक से आठ तक गिनें)

अनुलोम-विलोम प्राणायाम की विधि –

अ. दाहिने नासिका छिद्र को दाहिने हाथ के अंगूठे से बंद कर बायें नासिका छिद्र से धीरे धीरे मन में एक से चार की गिनती करते हुए श्वास अंदर लें, तत्पश्चात् अनामिका या मध्यमा से बायें नासिका छिद्र को बंद कर दाहिने छिद्र से धीरे धीरे एक से आठ की गिनती करते हुए श्वास बाहर छोड़ें ; पुनः इसी प्रकार गिनते हुए दाहिनी ओर से श्वास लें तथा बायीं ओर से छोड़ें, यह एक आवर्तन हुआ।

आ. इसी प्रकार शेष दो आवर्तन भी करें।
आचमन पात्र के जल से हस्त प्रक्षालन करें।

स्वस्तिवाचनम्

मृग मुद्रा में अक्षत लेकर श्लोक का उच्चारण करें। 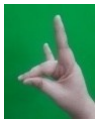

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ १॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टंयज्ञ (गं) समिमं दधातु।
विश्वेदेवाऽस इहमादयन्तामोऽम् प्रतिष्ठ॥ २॥

एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति॥ ३॥

श्री गुरु पादुका पर अक्षत अर्पण करें।

प्रार्थना

नमस्कार मुद्रा में समाहित होकर एकाग्र मन से प्रार्थना करें ।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥ १॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेत् शृणुयादपि॥ २॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥ ३॥

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥ ४॥

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ ५ ॥
वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ ६ ॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ७ ॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ॥ ८ ॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥ ९ ॥

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ १० ॥

विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् ।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ शुभं कर्म समारभेत् ॥ ११ ॥

ॐ श्री सद्गुरुचरणकमलेभ्यो नमः ।
श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । उमामहेश्वराभ्यां नमः ।
लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः ।
शचीपुरन्दराभ्यां नमः । इष्टदेवताभ्यो नमः ।
कुलदेवताभ्यो नमः । ग्रामदेवताभ्यो नमः ।
स्थानदेवताभ्यो नमः । वास्तुदेवताभ्यो नमः ।
एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।
सर्वेभ्यो महापुरुषेभ्यो नमो नमः ॥ १२ ॥

सङ्कल्पः

बायें हाथ में जल से भरी आचमनी तथा दाहिने हाथ में एक तुलसीदल पकड़ें।
आचमनी को तुलसीदल पर हलके से स्पर्श करते हुए पकड़कर सङ्कल्प का उच्चारण करें।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बुद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत-देशैकदेशे..... क्षेत्रे ..... नगरे ..... नाम संवत्सरे ..... अयने .....ऋतौ ..... मासे ..... पक्षे ..... पुण्यतिथौ ..... वासरे सर्वेषु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थानस्थितेषु ..... नाम ....गोत्रोत्पन्नोऽहं /.....नाम्नी .....गोत्रोत्पन्नाऽहं सर्वेषां सारस्वतमहाजनानां श्रीशिवप्रसादसिद्ध्यर्थे यथाज्ञानं यथाशक्ति यथामिलितोपचारैः श्रीशिवपूजनं करिष्ये।

आचमनी का जल तुलसीदल के ऊपर से आचमन की थाली/प्लेट में छोड़कर तुलसीदल श्री गुरु पादुका पर अर्पण करें।

घण्टापूजनम्

एक बार घंटी बजाकर घंटी, भूमि पर/उसके स्थान पर रखें।
श्लोक का उच्चारण करते हुए बायें हाथ से घंटी पकड़ कर दाहिने हाथ की अनामिका से घंटी पर चंदन, अक्षत एवं पुष्पदल(पंखुड़ी) लगाएँ।

ॐ आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टानादं प्रकुर्वीत पश्चाद् घण्टां प्रपूजयेत्॥
ॐ घण्टास्थदेवतायै नमः।
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि॥ नमस्करोमि ॥

नमस्कार करें।

वरुणध्यानम्

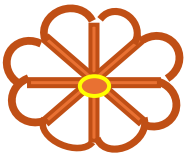

दाहिने हाथ की अनामिका से चंदन द्वारा भूमि पर चित्रानुसार
अष्टदल बनाएँ। (सर्वप्रथम + का चिन्ह फिर x का चिन्ह बनाइये। हाथ धोवें।
पूर्व से शुरू कर दक्षिणावर्त दिशा में अनामिका द्वारा कोनों को निरंतर बिना हाथ उठाए जोड़ते हुए पंखुड़ियाँ बनायें।

हस्त प्रक्षालन करें।

ॐ नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥
ॐ वरुणं ध्यायामि, आवाहयामि, पूजयामि।

अष्टदल पर चंदन, अक्षत, पुष्प अर्पण करें। अब शुद्ध जल से भरा कलश इस अष्टदल पर प्रतिष्ठित करें।
नमस्कार करें।

कलशपूजनम्

नीचे दिये हुए श्लोक का उच्चारण करते हुए कलश पर पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर इस क्रम में अनामिका द्वारा चंदन तथा मध्यमा द्वारा कुमकुम लगायें। अक्षत तथा पुष्पदल भी इसी क्रम में लगायें।

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ १॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥ २॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशे तु समाश्रिताः॥ ३॥

दाहिनी हथेली से कलश का मुख हलके से बंद रखकर नीचे दिये हुए मंत्र का उच्चारण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः।
अस्मिन्कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् आवाहयामि पूजयामि॥ ४॥

धेनु मुद्रा बनायें और मंत्र का उच्चारण करते हुए कलश के ऊपर दक्षिणावर्त दिशा में (बायीं से दायीं ओर) पाँच बार घुमायें।

ॐ वं वरुणाय नमः।

इसी तरह मत्स्य मुद्रा कलश के ऊपर रखकर केवल अंगूठों को आगे (ऊपर) से स्वयं की ओर (नीचे) पाँच बार घुमायें।

ॐ वं वरुणाय नमः।

अंकुश मुद्रा (दाहिनी हथेली की मुठ्ठी बाँधकर केवल मध्यमा खोलें) में श्लोक का उच्चारण करते हुए दाहिने कंधे के पीछे से मुद्रा को कलश के मुख पर लायें और नीचे दिये हुए श्लोक का उच्चारण करते हुए पवित्र नदियों / तीर्थों का आवाहन करें।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ ५॥

नीचे दिये हुए मंत्र के साथ पुष्प पर चंदन, अक्षत लगाकर कलश के जल में अर्पण करें।

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। नमस्करोमि॥

नीचे दिये हुए मंत्रों का उच्चारण करते हुए वरुण देवता का आवाहन करें।

ॐ पूर्वे ऋग्वेदाय नमः। ॐ दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः।
ॐ पश्चिमे सामवेदाय नमः। ॐ उत्तरे अथर्वणवेदाय नमः।
ॐ कलशमध्ये अपाम्पतये वरुणाय नमः॥ ६॥

नमस्कार करें।

कलशप्रार्थना

कलश के समीप अञ्जलि मुद्रा करें।
श्लोक का उच्चारण करें।

त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा॥
प्रसन्नो भव। वरदो भव।
अनया पूजया वरुणाद्यावाहिता देवताः प्रीयन्तां न मम।

नमस्कार करें।

अब कलश उसके स्थान से न हिलायें।

एक अन्य आचमन पात्र लें। कलश से चार आचमनी अभिमंत्रित जल इस आचमन पात्र के जल में डालें। ***अब आगे की पूजन विधि में श्री गुरु पादुका के लिए केवल इसी अभिमंत्रित जल का उपयोग करें।*** *आचमनी से थोड़ा अभिमंत्रित जल स्नान पात्र में भी डालें।*

शङ्खपूजनम्

थोड़ा अभिमंत्रित जल शंख में डालकर शंख धोवें।

चार आचमनी अभिमन्त्रित जल शंख में भरकर शंख शंखदानी स्टॅण्ड पर रखें।

पुष्प, चंदन, अक्षत मृगमुद्रा में लेकर मंत्र का उच्चारण करें।

ॐ शं पाञ्चजन्याय नमः।

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

शङ्ख पर पुष्प, चंदन, अक्षत अर्पण करें।

नमस्करोमि॥

नमस्कार करें।

प्रोक्षणम्

दाहिनी हथेली पर एक तुलसी दल रखकर बायें हाथ से शंख का थोड़ा जल तुलसी दल पर डालें।

शंख को उसके नियत स्थान पर रख दें।

दाहिनी मुठ्ठी को हलके से बंदकर, पूजा सामग्री पर मन ही मन इष्ट मंत्र / ॐ नमः शिवाय का जप करते हुए मुट्ठी के जल से प्रोक्षण करें।

आत्मप्रोक्षणम्

इसी तुलसी दल को बायीं हथेली पर रखकर दाहिने हाथ से शंख का थोड़ा जल तुलसीदल पर डालें।

दाहिने हाथ की मृग मुद्रा द्वारा तुलसी दल पकड़ें।

श्लोक का उच्चारण करते हुए, तुलसी दल द्वारा बायीं ओर नीचे, ऊपर, वैसे ही दाहिनी ओर ऊपर, नीचे इस क्रम में आत्म प्रोक्षण करें ।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

शेष जल के साथ तुलसी दल को थाली (प्लेट) में डाल दें।

आसनशुद्धिः

आसन के दाहिने, अग्र कोने को थोड़ा ऊपर उठायें।

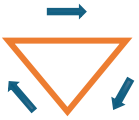

दाहिनी अनामिका में चंदन/गंध लगाकर चित्रानुसार दर्शाई दिशा में हाथ उठाए बिना भूमि पर त्रिकोण बनायें।
हस्त प्रक्षालन करें।
गंध /चंदन, अक्षत, पुष्पदल त्रिकोण पर समर्पित करें ।
दाहिने हाथ की अनामिका और मध्यमा को त्रिकोण के बीच में रखें, बायें हाथ से दाहिनी कोहनी को स्पर्श करते हुए श्लोक का उच्चारण करें।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥ १॥
ॐ आधारशक्तये नमः। ॐ कूर्मासनाय नमः।
ॐ अनन्तासनाय नमः। ॐ विमलासनाय नमः।
ॐ आत्मासनाय नमः॥ २॥
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। नमस्करोमि॥

नमस्कार करें एवं हस्त प्रक्षालन करें।

दिग्बन्धः

मस्तक से थोड़ा ऊपर चित्रानुसार त्रिशूल मुद्रा बनाकर कलाई का उपयोग करते हुए दक्षिणावर्त (बायीं से दायीं ओर) चारों दिशाओं में तीन बार मुद्रा घुमाते हुए नीचे दिये हुए श्लोक का उच्चारण करें।

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

श्लोक के अंत में मुद्रा से सामने की ओर एक झटका दें।

दीपकपूजनम्

पुष्प में गंध, अक्षत लगाकर उसे मृग मुद्रा में पकड़े हुए श्लोक का उच्चारण करें।

दीपो ज्योतिः परब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दनः।

दीपो हरतु मे ध्वान्तं संविद्दीप नमोऽस्तु ते ॥
ॐ दीपदेवतायै नमः ।
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ।

चौरंग (चौकी) के ऊपर रखे हुए प्रज्ज्वलित प्रधान दीपक को पुष्प, गंध, अक्षत अर्पण करें।

नमस्करोमि ॥

नमस्कार करें।

भैरवनमस्कारः

पुष्प में गंध, अक्षत लगाकर उसे मृग मुद्रा में पकड़े हुए श्लोक का उच्चारण करें।

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम ।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥
ॐ भं भैरवाय नमः ।
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ।

यह पुष्प चौरंग/चौकी पर घंटी की बायीं ओर अर्पित करें।

नमस्करोमि ॥

नमस्कार करें ।

श्रीशिवपूजनम्

ध्यानम्

दाहिने हाथ की मृग मुद्रा में पुष्प लेकर श्लोक का उच्चारण करें।

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥ १॥
ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। ध्यानं समर्पयामि॥

श्री गुरुपादुका पर पुष्प अर्पण करें।

आवाहनम्

दाहिने हाथ की मृग मुद्रा में अक्षत लेकर श्लोक का उच्चारण करें।

एह्येहि गौरीश पिनाकपाणे शशाङ्कमौले वृषभाधिरूढ।
देवाधिदेवेश महेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते॥
ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। आवाहनं समर्पयामि॥

श्री गुरुपादुका पर अक्षत अर्पण करें।

आसनम्

दाहिने हाथ की मृग मुद्रा में पुष्प लें। श्लोक का उच्चारण करें।

विश्वात्मने नमस्तुभ्यं चिदम्बरनिवासिने।
रत्नसिंहासनं चारु ददामि करुणानिधे॥
ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि॥

श्री गुरु पादुका पर पुष्प अर्पण करें।

पाद्यम्

श्लोक का उच्चारण करें।

नमः शर्वाय सोमाय सर्वमङ्गलहेतवे।
तुभ्यं सम्प्रददे पाद्यं श्रीकैलासनिवासिने॥
ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥

आचमनी से दो बार अभिमन्त्रित जल श्री गुरु पादुका पर अर्पण करें।

अर्घ्यम्

आचमनी में अभिमन्त्रित जल भरकर आचमनी को आचमन पात्र पर रखें। आचमनी के जल में गन्ध, अक्षत, पुष्प डालकर, आचमनी दाहिने हाथ में पकड़े हुए श्लोक का उच्चारण करें।

अनर्घफलदात्रे च शास्त्रे वैवस्वतस्य च।
तुभ्यमर्घ्यं प्रदास्यामि द्वादशान्तनिवासिने॥
ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि॥

श्री गुरु पादुका पर आचमनी द्वारा जल सहित गंध, अक्षत, पुष्प अर्पण करें।

आचमनम्

श्लोक का उच्चारण करते हुए आचमनी से तीन बार अभिमंत्रित जल श्री गुरु पादुका पर अर्पण करें और एक आचमनी अभिमंत्रित जल तीर्थ पात्र में डालें ।

अशेषजगदाधार निराधार महेश्वर।
ददाम्याचमनं तुभ्यं सुन्दरेश नमोऽस्तु ते॥
ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। आचमनीयं जलं समर्पयामि॥

स्नानम्

कलश से एक आचमनी अभिमंत्रित जल लेकर स्नान पात्र में डालें।
सावधानीपूर्वक श्री गुरु पादुका पर अर्पित किये गए पुष्प एकत्रित कर निर्माल्य पात्र में डालें। हस्त प्रक्षालन करें।
श्लोक का उच्चारण करते हुए, स्नानपात्र के संपूर्ण अभिमंत्रित जल से श्री गुरु पादुका का अभिषेक करें।

गङ्गाक्लिन्नजटाभार सोम सोमार्धशेखर।
नद्या नीरैः समानीतैः स्नानं कुरु महेश्वर॥
ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। स्नानीयं जलं समर्पयामि॥
स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि॥

तत्पश्चात् रिक्त स्नानपात्र नियत स्थान पर रखें।
एक आचमनी अभिमंत्रित जल लेकर तीर्थ पात्र में डालें।
सोमसूत्र/अभिषेक की थाली (प्लेट) में अर्पित अभिषेक के जल से अनामिका एवं मध्यमा द्वारा एक बार आत्म प्रोक्षण करें।
हस्त प्रक्षालन करें।
बायीं हथेली में एक स्वच्छ रुमाल /तौलिया लेकर उस पर श्री गुरु पादुका रखकर उसे अच्छी तरह से पोंछें।
श्री गुरु पादुका पर चंदन लगाएँ।
सोमसूत्र/अभिषेक की थाली (प्लेट) के पूरे जल को तीर्थ पात्र में डालें तथा सोमसूत्र/अभिषेक की थाली (प्लेट) को एक ओर रख दें।
पुष्पों से सजी थाली (प्लेट) चौरंग/चौकी पर रखें।
दाहिने हाथ से श्री गुरु पादुका इस थाली में स्थापित करें।

वस्त्रम्

दाहिने हाथ से मृग मुद्रा में अक्षत लेकर श्लोक का उच्चारण करते हुए श्री गुरु पादुका पर अक्षत अर्पण करें।

दिगम्बर नमस्तुभ्यं गजाजिनधराय च।
व्याघ्रचर्मोत्तरीयाय वस्त्रयुग्मं ददाम्यहम्॥
ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि॥
तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि॥

एक आचमनी अभिमंत्रित जल तीर्थ पात्र में डालें।

यज्ञोपवीतम्

श्लोक का उच्चारण करते हुए श्री गुरु पादुका पर अक्षत अर्पण करें।

चराचर-जगद्रत्न-प्रोतसूत्रधराय ते।
नागयज्ञोपवीताय ह्युपवीतं ददाम्यहम्॥
ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि॥
तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि॥

एक आचमनी अभिमंत्रित जल तीर्थ पात्र में डालें।

भस्म

श्लोक का उच्चारण करते हुए श्री गुरु पादुका पर भस्म अर्पण करें।

अग्निहोत्रसमुद्भूतं विरजाहोमपावितम्।
गृहाण भस्म हे स्वामिन् भक्तानां भूतिदायक॥
ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। भस्मकणान् समर्पयामि॥

गन्धः

श्लोक का उच्चारण करते हुए श्री गुरु पादुका के अँगूठों पर चंदन लगायें।

नमस्सुगन्धदेहाय ह्यवन्ध्यफलदायिने।
तुभ्यं गन्धान् प्रदास्यामि चान्धकासुरभञ्जन॥
ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। गन्धं समर्पयामि॥

अक्षताः

श्लोक का उच्चारण करते हुए श्री गुरु पादुका पर अक्षत अर्पण करें।

अक्षतान् धवलान् देव सिद्धगन्धर्वपूजित।
सुन्दरेश नमस्तुभ्यं गृहाण वरदो भव॥
ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। अक्षतान् समर्पयामि॥

पुष्पम्

दाहिने हाथ से मृग मुद्रा में पुष्प लें।
श्लोक का उच्चारण करते हुए श्री गुरु पादुका पर पुष्प अर्पण करें।

तुरीयवनसम्भूतं परमानन्दसौरभम्।
पुष्पं गृहाण सोमेश पुष्पचापविभञ्जन॥
ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। पुष्पाणि समर्पयामि॥

बिल्वपत्रम्

अभिमंत्रित जल द्वारा एक बिल्वपत्र धोकर दाहिने हाथ में पकड़कर श्लोक का उच्चारण करें।

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम्।
त्रिजन्मपाप-संहारम् एकबिल्वं शिवार्पणम्॥

ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। बिल्वपत्रं समर्पयामि॥

बिल्वपत्र का पृष्ठ / खुरदुरा भाग ऊपर की तरफ और डंठल स्वयं की ओर रखते हुए श्री गुरु पादुका पर अर्पण करें।

श्रीशिव-अष्टोत्तरशतनामावल्या सहितः बिल्वार्चने / पुष्पार्चने विनियोगः।

अष्टोत्तरशतनामावलि के प्रत्येक "नमः" पर श्री गुरु पादुका पर एक बिल्वपत्र / पुष्पदल अर्पण करें।

श्रीशिव-अष्टोत्तरशतनामावलिः

ॐ शिवाय नमः।
ॐ महेश्वराय नमः।
ॐ शम्भवे नमः।
ॐ पिनाकिने नमः।
ॐ शशिशेखराय नमः।
ॐ वामदेवाय नमः।
ॐ विरूपाक्षाय नमः।
ॐ कपर्दिने नमः।
ॐ नीललोहिताय नमः।
ॐ शङ्कराय नमः। (१०)
ॐ शूलपाणये नमः।
ॐ खट्वाङ्गिने नमः।
ॐ विष्णुवल्लभाय नमः।
ॐ शिपिविष्टाय नमः।
ॐ अम्बिकानाथाय नमः।
ॐ श्रीकण्ठाय नमः।
ॐ भक्तवत्सलाय नमः।
ॐ भवाय नमः।
ॐ शर्वाय नमः।
ॐ त्रिलोकेशाय नमः। (२०)
ॐ शितिकण्ठाय नमः।
ॐ शिवाप्रियाय नमः।
ॐ उग्राय नमः।
ॐ कपालिने नमः।

ॐ कामारये नमः।
ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः।
ॐ गङ्गाधराय नमः।
ॐ ललाटाक्षाय नमः।
ॐ कालकालाय नमः।
ॐ कृपानिधये नमः। (३०)
ॐ भीमाय नमः।
ॐ परशुहस्ताय नमः।
ॐ मृगपाणये नमः।
ॐ जटाधराय नमः।
ॐ कैलासवासिने नमः।
ॐ कवचिने नमः।
ॐ कठोराय नमः।
ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः।
ॐ वृषाङ्काय नमः।
ॐ वृषभारूढाय नमः। (४०)
ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः।
ॐ सामप्रियाय नमः।
ॐ स्वरमयाय नमः।
ॐ त्रयीमूर्तये नमः।
ॐ अनीश्वराय नमः।
ॐ सर्वज्ञाय नमः।
ॐ परमात्मने नमः।
ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः।
ॐ हविषे नमः।
ॐ यज्ञमयाय नमः। (५०)
ॐ सोमाय नमः।
ॐ पञ्चवक्त्राय नमः।

ॐ सदाशिवाय नमः।
ॐ विश्वेश्वराय नमः।
ॐ वीरभद्राय नमः।
ॐ गणनाथाय नमः।
ॐ प्रजापतये नमः।
ॐ हिरण्यरेतसे नमः।
ॐ दुर्धर्षाय नमः।
ॐ गिरीशाय नमः। (६०)
ॐ गिरिशाय नमः।
ॐ अनघाय नमः।
ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः।
ॐ भर्गाय नमः।
ॐ गिरिधन्विने नमः।
ॐ गिरिप्रियाय नमः।
ॐ कृत्तिवाससे नमः।
ॐ पुरारातये नमः।
ॐ भगवते नमः।
ॐ प्रमथाधिपाय नमः। (७०)
ॐ मृत्युञ्जयाय नमः।
ॐ सूक्ष्मतनवे नमः।
ॐ जगद्व्यापिने नमः।
ॐ जगद्गुरवे नमः।
ॐ व्योमकेशाय नमः।
ॐ महासेनजनकाय नमः।
ॐ चारुविक्रमाय नमः।
ॐ रुद्राय नमः।
ॐ भूतपतये नमः।
ॐ स्थाणवे नमः। (८०)

ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः।
ॐ दिगम्बराय नमः।
ॐ अष्टमूर्तये नमः।
ॐ अनेकात्मने नमः।
ॐ सात्त्विकाय नमः।
ॐ शुद्धविग्रहाय नमः।
ॐ शाश्वताय नमः।
ॐ खण्डपरशवे नमः।
ॐ अजाय नमः।
ॐ पाशविमोचकाय नमः। (९०)
ॐ मृडाय नमः।
ॐ पशुपतये नमः।
ॐ देवाय नमः।
ॐ महादेवाय नमः।
ॐ अव्ययाय नमः।
ॐ हरये नमः।
ॐ पूषदन्तभिदे नमः।
ॐ अव्यग्राय नमः।
ॐ दक्षाध्वरहराय नमः।
ॐ हराय नमः। (१००)
ॐ भगनेत्रभिदे नमः।
ॐ अव्यक्ताय नमः।
ॐ सहस्राक्षाय नमः।
ॐ सहस्रपदे नमः।
ॐ अपवर्गप्रदाय नमः।
ॐ अनन्ताय नमः।
ॐ तारकाय नमः।
ॐ परमेश्वराय नमः। (१०८)

अष्टपुष्पाणि

प्रत्येक नमः के उच्चारण पर एक पुष्प अर्पण करें।

ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः ॥ १ ॥
ॐ भवाय जलमूर्तये नमः ॥ २ ॥
ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः ॥ ३ ॥
ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः ॥ ४ ॥
ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः ॥ ५ ॥
ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः ॥ ६ ॥
ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः ॥ ७ ॥
ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः ॥ ८ ॥

अष्टोत्तरशतनामावलि के अंत में श्री गुरु पादुका पर समर्पित थोड़े पुष्पदल / बिल्वपत्र सतर्कता से उठाकर निर्माल्य पात्र में डालें, ताकि श्री गुरु पादुका पर आगे की विधि करने में सहजता हो, पर ध्यान रहे, श्री गुरु पादुका न हिलायें।
हस्त प्रक्षालन करें।

धूपः

माचिस की तीली द्वारा अगरबत्ती / धूप प्रज्वलित करें। बायें हाथ से घंटी बजाते हुए एवं नीचे दिये हुए श्लोक का उच्चारण करते हुए श्री गुरु पादुका को अगरबत्ती/धूप दिखाएँ (चित्र में दर्शाई गई दिशा के अनुसार)

धराधरसुतानाथ धूर्जटे धवलप्रभ।
धूपमाघ्रापयामीश दशाङ्गं गुग्गुलान्वितम् ॥
ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। धूपम् आघ्रापयामि ॥

दीपः

श्लोक उच्चारण के पूर्व माचिस की तीली द्वारा घी का दीपक प्रज्वलित करें।
बायें हाथ से घंटी बजाते हुए, दाहिने हाथ में दीपक लेकर, नीचे दिये हुए श्लोक का उच्चारण करते हुए श्री गुरु पादुका को दीपक दिखाएँ (चित्र में दर्शाई गई दिशा के अनुसार)

साज्यवर्तियुतं दीपं सर्वमङ्गलकारकम्।
समर्पयामि पश्येदं सोमसूर्याग्निलोचन॥
ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। दीपं दर्शयामि॥

दीप-दर्शन के तुरंत पश्चात् निर्माल्य (पुष्प) द्वारा दीप बुझायें (फूँक न मारें)।

नैवेद्यम्

नमस्कार करें।
हस्त प्रक्षालन करें। अनामिका पर चंदन लगाकर भूमि पर स्वस्तिक का चिन्ह बनाएँ। हस्त प्रक्षालन करें। नैवेद्य पात्र में नैवेद्य रखकर, पात्र स्वस्तिक पर रखें।

दाहिने हाथ में कुछ तुलसी दल लेकर उन्हें अभिमंत्रित जल से धोवें।
तुलसी दल को दाहिनी हथेली पर रखकर उन पर थोड़ा अभिमंत्रित जल डालें।
मंत्र का उच्चारण करें।

हस्तौ प्रक्षाल्य नैवेद्यं पुरतः स्थाप्य गायत्र्या सम्प्रोक्ष्य तुलसीदलैः आच्छाद्य नैवेद्यम्।

दाहिने हाथ पर बायाँ हाथ रखकर धेनु मुद्रा बनाएँ।
धेनु मुद्रा में ही कलाई का उपयोग कर नीचे दिये हुए मंत्र का उच्चारण करते हुए मुद्रा को तीन बार नैवेद्य पात्र के ऊपर घुमायें।

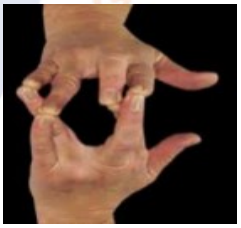

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ १॥

दाहिनी हथेली को हलके से बंदकर (हलकी मुट्ठी) तुलसी दल द्वारा नैवेद्य पर प्रोक्षण करें (जल छिड़कें)।
एक तुलसीदल नैवेद्य में डालें।
फिर सभी तुलसीदल बायीं हथेली पर रखें।
नीचे दिये हुए मंत्रों का क्रम से उच्चारण करें। प्रत्येक स्वाहा पर एक-एक तुलसीदल श्री गुरु पादुका पर अर्पण करें। (कुल ५ बार)
अंतिम मंत्र ('ॐ प्राण-अपान-व्यान-उदान-समानाः') का उच्चारण करते समय पाँचों अंगुलियों की ग्रास-मुद्रा नैवेद्य की ओर से श्री गुरु पादुका की ओर करें।

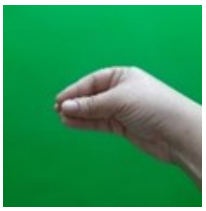

ॐ प्राणाय स्वाहा।
ॐ अपानाय स्वाहा।
ॐ व्यानाय स्वाहा।
ॐ उदानाय स्वाहा।
ॐ समानाय स्वाहा।
ॐ प्राण-अपान-व्यान-उदान-समानाः ॥ २ ॥
ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥

नमस्कार करें।
एक आचमनी अभिमंत्रित जल तीर्थ पात्र में डालें।

नीचे दिये हुए मंत्र का उच्चारण करते हुए एक आचमनी अभिमंत्रित जल नैवेद्य पर डालें।

पूर्वापोषणं समर्पयामि ॥

नीचे दिये हुए श्लोक का उच्चारण करें।

नैवेद्यं षड्रसोपेतं विषाशन घृतान्वितम्।
मधुक्षीरापूपयुक्तं गृह्यतां सोमशेखर ॥ ३ ॥
ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः।
नैवेद्यं निवेदयामि। नानाऋतुफलानि च समर्पयामि ॥

नमस्कार करें।
एक मिनट आँखें मूँद कर ध्यान मुद्रा में बैठें। फिर एक बार घंटी बजाएं। क्रम से नीचे दिये हुए मंत्रों का उच्चारण करें।

आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥

एक आचमनी अभिमंत्रित जल तीर्थ पात्र में डालें।

उत्तरापोषणं समर्पयामि ॥

एक आचमनी अभिमंत्रित जल नैवेद्य पर डालें।

मुखप्रक्षालनं समर्पयामि ॥

एक आचमनी अभिमंत्रित जल तीर्थ पात्र में डालें।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि ॥

एक आचमनी अभिमंत्रित जल तीर्थ पात्र में डालें ।
नीचे दिये हुए मंत्र का उच्चारण करते हुए दोनों अनामिका पर चंदन लगाकर दाहिनी कलाई को बायीं कलाई पर रखते हुए अंगूठे द्वारा एक हलके झटके से चंदन श्री गुरु पादुका पर छिड़कें।

करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि ॥

ताम्बूलम्

श्लोक उच्चारण के साथ एक आचमनी अभिमंत्रित जल पान-सुपारी पर अर्पण करें।

नागवल्लीदलैः पूगैः नानाचूर्णैश्च संयुतम्।
नागेन्द्रहार ताम्बूलं मुखामोदं च गृह्यताम् ॥
ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। मुखशुद्ध्यर्थं ताम्बूलं समर्पयामि ॥

दक्षिणा

श्लोक उच्चारण के साथ एक आचमनी जल दक्षिणा पर अर्पण करें।

धनदाधिप देवेश दक्षिणाद्रव्यमुत्तमम्।
यथाशक्ति मया दत्तं गृह्यतां वृषभध्वज ॥
ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। साङ्गतासिध्यर्थं हिरण्यगर्भदक्षिणां समर्पयामि ॥

नीराजनम्

श्लोक उच्चारण के पहले मंगल-आरती, कपूर के साथ प्रज्वलित करें।
नीचे दिये हुए श्लोकों का उच्चारण करते हुए, बायें हाथ से घंटी बजाते हुए, दाहिने हाथ से आरती दक्षिणावर्त दिशा में (बायीं से दायीं ओर) घुमाते हुए करें।

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ १ ॥

शान्तं पद्मासनस्थं शशधरमुकुटं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणाङ्गे वहन्तम्।
नागं पाशं च घण्टां डमरुकसहितं साङ्कुशं वामभागे
नानालङ्कारदीप्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि॥ २॥

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि॥ ३॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव॥ ४॥

नीराजनं निर्मलदीप्तिमद्भिर्-दीपाङ्कुरैरुज्ज्वलमुच्छ्रितैश्च।
घण्टानिनादेन समर्पयामि मृत्युञ्जयाय त्रिपुरान्तकाय॥ ५॥

ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। नीराजनं दर्शयामि।

तत्पश्चात् घंटी को फिर से उसके नियत स्थान पर रखकर उसकी भी एक बार आरती करें।
अब बायें हाथ से आरती पकड़ें।

जल आरती

दाहिने हाथ से दक्षिणावर्त दिशा में शंख तीन बार घुमाकर मंत्र का उच्चारण करते हुए श्री गुरु पादुका की जल-आरती करें।

ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। जलारार्तिकं समर्पयामि॥

शंख के जल को तीर्थ पात्र में डालकर शंख को उसके नियत स्थान पर रखें।
नीचे दिये हुए मंत्र का उच्चारण करते हुए, दाहिनी हथेली को आरती के ऊपर से घुमाते हुए, श्री गुरु पादुका की ओर दर्शावें।

देवाभिवन्दनम्।

फिर नीचे दिये हुए मंत्र का उच्चारण करते हुए स्वयं भी आरती लेवें।

आत्माभिवन्दनम्॥

हस्त प्रक्षालन करें।

मन्त्रपुष्पाञ्जलिः

अंजलि मुद्रा में पुष्प लेकर श्री गुरु पादुका के समक्ष मुद्रा दर्शावें।
श्लोक का उच्चारण करते हुए अंजलि मुद्रा से श्री गुरु पादुका पर पुष्प अर्पण करें।

हर विश्वाखिलाधार निराधार निराश्रय।
पुष्पाञ्जलिं गृहाणेश सोमेश्वर नमोऽस्तु ते॥
ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि॥

प्रदक्षिणा

नमस्कार मुद्रा में श्लोक का उच्चारण करते हुए कलाई के उपयोग से दक्षिणावर्त दिशा में बायीं से दायीं ओर नमस्कार मुद्रा तीन बार घुमायें।

पदे पदे दुरितघ्नं मायाभ्रमणवारकम्।
पुरारे तव प्रीत्यर्थं प्रदक्षिणशतं मम॥
ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। प्रदक्षिणां समर्पयामि॥

प्रार्थना

नमस्कार मुद्रा के साथ श्लोक का उच्चारण करें।

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष मां परमेश्वर॥
ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। प्रार्थनां समर्पयामि॥

नमस्कारः

नमस्कार मुद्रा के साथ श्लोक का उच्चारण करें।

मृत्युञ्जयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे।
अमृतेशाय शर्वाय महादेवाय ते नमः॥
ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। नमस्करोमि॥

विशेषार्घ्यम्

आचमनी में अभिमंत्रित जल भरकर उसे आचमन पात्र पर रखें।
आचमनी के जल में गंध, अक्षत, पुष्पदल डालें।
दाहिने हाथ में जल से भरी आचमनी पकड़े हुए श्लोक का उच्चारण करें।

वरद त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम॥

श्लोक के अंत में आचमनी श्री गुरु पादुका के समक्ष दक्षिणावर्त दिशा में बायीं से दायीं ओर तीन बार घुमाकर जल तीर्थ पात्र में छोड़ दें।

ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। विशेषार्घ्यं समर्पयामि॥

प्रार्थनापूर्वकं क्षमापनम्

नमस्कार मुद्रा के साथ श्लोक का उच्चारण करें।

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥ १॥
क्षमस्व देवदेवेश क्षमस्व भुवनेश्वर।
तव पादाम्बुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे॥ २॥
ॐ श्रीभवानीशङ्कराय नमः। प्रार्थनापूर्वकं क्षमापनं समर्पयामि॥

समर्पणम्

बायें हाथ में आचमनी में अभिमंत्रित जल तथा दाहिने हाथ में तुलसी दल लेकर आचमनी को हलके से तुलसी दल पर स्पर्श करते हुए पकड़ें। श्लोक का उच्चारण करें।

सर्वं सदाशिव सहस्व ममापराधं
मग्नं समुद्धर महत्यमुमापदब्धौ।
सर्वात्मना तव पदाम्बुजमेव दीनः
स्वामिन् अनन्यशरणः शरणं गतोऽस्मि (२)॥ १॥

गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च।
आगताः सुखसम्पत्तीः पुण्यांश्च तव दर्शनात्॥ २॥

देवो दाता च भोक्ता च देवरूपमिदं जगत्।
देवो जयति सर्वत्र यो देवः सोऽहमेव हि॥ ३॥

अनेन कृतपूजाकर्मणा श्रीभवानीशङ्करो महारुद्रः प्रीयताम्॥
ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु॥

तुलसी दल के ऊपर से आचमनी का जल तीर्थ पात्र में छोड़ें। तुलसीदल श्री गुरु पादुका पर अर्पण करें।
नीचे दिये हुए श्लोक का उच्चारण करते हुए दाहिनी अनामिका एवं मध्यमा द्वारा श्री गुरु पादुका का स्पर्श करें। फिर वही अनामिका एवं मध्यमा स्वयं के अनाहत चक्र पर रखें।

तिष्ठ तिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवाः सर्वे तिष्ठन्ति मे हृदि॥ ४॥

नमस्कार करें।

जपः

इष्टमंत्र जप / ॐ नमः शिवाय का जप तीन मिनट तक करें।
जप के अंत में नमस्कार करें।
स्वयं के इष्ट देव/ देवी के अनुसार नीचे दिये हुए किसी एक श्लोक के उच्चारण के पश्चात् एक आचमनी जल दाहिने हाथ की अनामिका एवं मध्यमा के ऊपर से थाली में छोड़कर जप अर्पण करें।

(देवीश्लोकः) - गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

(देवश्लोकः) - गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर॥

ॐ नमः पार्वतीपतये हर हर महादेव *का घोष करें।*
तीर्थ, पुष्प, प्रसाद का वितरण करें एवं स्वयं भी ग्रहण करें।

श्रीदेवीपूजनम्

श्रीवल्लीभुवनेश्वरी देवी

॥ ॐ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री भवानीशङ्कराय नमः ॥ श्री मात्रे नमः ॥

श्री देवी पूजन हेतु आवश्यक सामग्री

पूजा – द्रव्य / पात्र / वस्तु	पूजा - सामग्री
श्री गुरु पादुका	पुष्प / पुष्पदल (फूलों की पंखुड़ियाँ)
सोमसूत्र/थाली (प्लेट) श्री गुरु पादुका के लिए	गंध (चंदन)
चौरंग / चौकी	अक्षत
आसन, स्वयं की जपमाला (गोमुख में)	कुमकुम (रोली)
कलश	बिल्वपत्र (बेलपत्ती)
स्नान-पात्र	तुलसी
दो आचमन-पात्र	कपूर
तीर्थ-पात्र	अगरबत्ती / धूप
फूलों से सजी थाली (प्लेट) एवं पूजा सामग्री रखने के लिए	बाती
अन्य थाली	नैवेद्य
तेल का दिया / दीपक	पान-सुपारी
घी का दिया / दीपक	दक्षिणा
नैवेद्य आरती (एक बाती वाली घी की आरती), कपूर आरती, नीराजन के लिये पाँच दियों वाली आरती	माचिस
	शुद्ध जल
अगरबत्ती / धूप दानी (स्टॅण्ड)	
शंख (शंखदानी(स्टॅण्ड)सहित)	
स्वच्छ तौलिया / रुमाल (दो – एक पादुका के लिए, एक स्वयं के लिए)	
घंटी	
निर्माल्य पात्र	
बुझी माचिस तीलियों के लिये पात्र	

सामान्य निर्देश

१. देवी के विग्रह(मूर्ति) की बजाय चांदी की छोटी सी श्री गुरु पादुका का उपयोग श्री देवी पूजन में किया जा सकता है।

२. पूजन विधि में उपयोग में आने वाले सभी पात्र ताँबे, पीतल या चाँदी के हों। परंतु बड़ी थाली, निर्माल्य पात्र स्टील के हो सकते हैं।

३. स्वच्छ चौरंग / चौकी पर एक सोमसूत्र/थाली/प्लेट में श्री गुरु पादुका स्थापित करें।

४. प्रधान दीपक (जो पूजा के आरंभ से समापन तक प्रज्वलित रहेगा), एक अन्य दीपक (पूजन विधि के लिये), धूप एवं नीराजन (आरती) के लिये निर्देश –

- प्रधान दीपक - इसमें तेल भरकर दो बाती आपस में पिरोकर इसमें रखें। बाती के सिरे पर शीघ्र प्रज्वलन हेतु थोड़ा कपूर लगा सकते हैं।
- अन्य दीपक - दो बाती आपस में पिरोकर घी में डुबोकर इसमें रखें। बाती के सिरे पर शीघ्र प्रज्वलन हेतु थोड़ा कपूर लगा सकते हैं।
- धूप - केवल एक ही धूप/अगरबत्ती को स्टॅण्ड/धूपदानी में लगाकर प्रज्वलन हेतु तैयार रखें।
- नीराजन (आरती) - एक-आरती के लिये, दो बाती आपस में पिरोकर, घी में डुबोकर इसमें रखें। साथ ही एक टुकड़ा कपूर, अक्षत एवं कुमकुम नीराजन के हत्थे पर रखें।

५. संकल्प के लिए पूजन के क्षेत्र, नगर, संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, दिवस (वार/दिन), नाम एवं गोत्र की जानकारी तैयार रखें।

६. चंदन, अक्षत, पुष्प अर्पण करते समय मृग मुद्रा का उपयोग करें। तर्जनी तथा कनिष्ठिका का उपयोग पूजन में वर्ज्य है।

७. कलश पूजन के पश्चात् उसे नियत स्थान से न हिलायें।

८. आसन -

- प्रधान दीपक प्रज्वलित करने से पहले स्वयं के बैठने के लिये आसन पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख होकर बैठने हेतु उचित स्थान पर फैलाकर रखें।

- आसन पर पैर न रखें।
- पूजा समापन के पश्चात् तुरंत आसन तहाकर यथास्थान रखें।

९. चौरंग/चौकी पर रखे प्रधान दीपक की लौ का उपयोग धूप/अगरबत्ती या अन्य दीपक प्रज्वलित करने के लिये न करें।

१०. श्री गुरु पादुका को स्नान कराने के पश्चात् पादुका पर जल अर्पण न करें।

११. हस्त प्रक्षालन(हाथ धोवें) -

- हाथ धोने के लिये स्वयं के नित्य उपयोग में लेने वाले आचमन पात्र का ही उपयोग करें।
- पूजन के दौरान भूमि अथवा शरीर का स्पर्श होने पर हस्त प्रक्षालन करें (हाथ धोवें)।
- किसी अन्य वस्तु का, जो अभिमंत्रित न हो, स्पर्श होने पर हाथ धोवें।
- आरती लेने के पश्चात् हस्त प्रक्षालन करें (हाथ धोवें)।
- निर्माल्य स्पर्श करने के पश्चात् हस्त प्रक्षालन करें (हाथ धोवें)। (निर्माल्य को पात्र में डालते समय उसे न सूंघें)

१२. यदि छोटे बच्चे पूजन कर रहे हैं, तब उनके माता-पिता दीप, धूप प्रज्वलित करने के लिये उनकी सहायता करें। उनके हाथ में माचिस न दें।

१३. पूजन के पूर्व कलश, स्नानपात्र तथा आचमन पात्र में शुद्ध जल भरें।

१४. पूजन प्रारंभ करने के पूर्व प्रधान दीपक प्रज्वलित करें।

१५. श्री गुरु का ध्यान कर, उन्हें प्रणाम कर पूजन प्रारंभ करें।

१६. पूजन विधि समापन के पश्चात् पूजा स्थान स्वच्छ करें ताकि पूजा में उपयोग की हुई किसी भी वस्तु पर आपका पैर न पड़े।

पूजा सामग्री का सज्जीकरण (व्यवस्था)

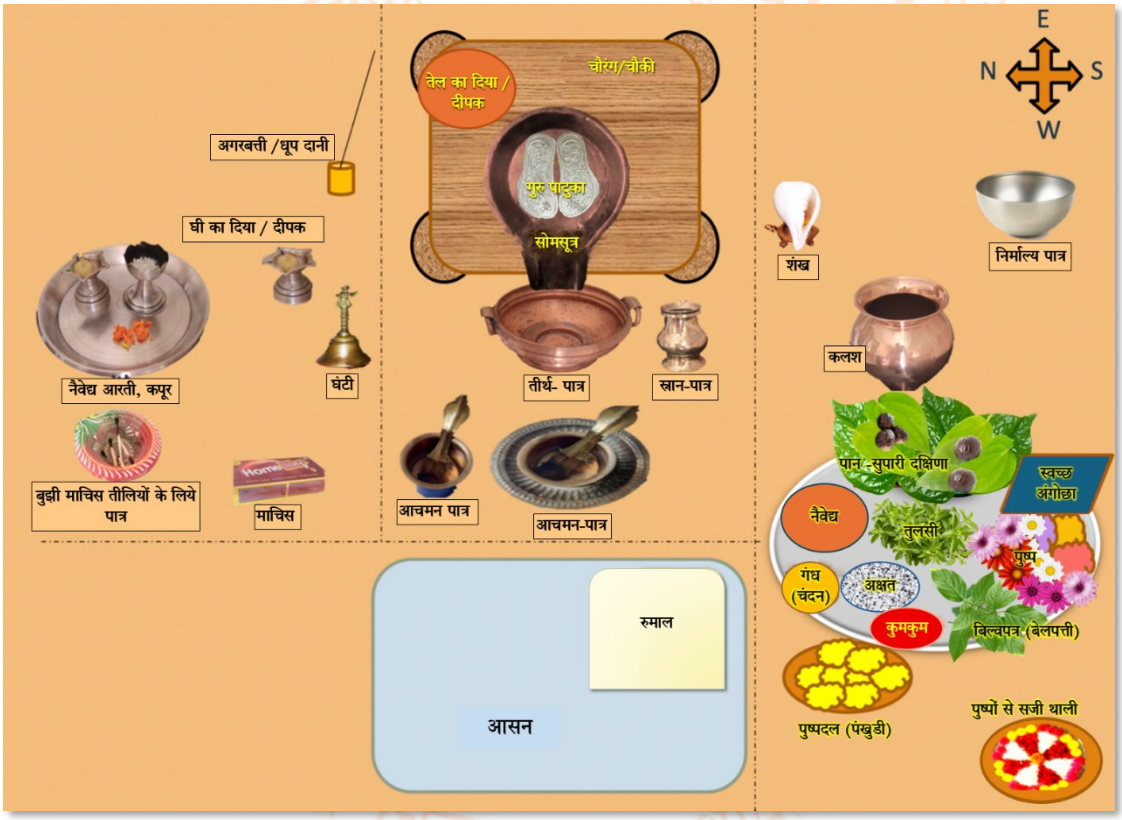

पूजा-पूर्वाङ्गम्

आचमनम्

नीचे दिये हुए प्रत्येक मंत्र का क्रम से एक बार उच्चारण करें।
प्रथम तीन मंत्रों के उच्चारण में प्रत्येक स्वाहा के पश्चात् अपने आचमन पात्र से एक चम्मच जल ग्रहण करें। चतुर्थ (अंतिम) स्वाहा पर आचमनी द्वारा एक आचमनी जल दाहिनी हथेली की मध्यमा और अनामिका के ऊपर से आचमन पात्र की थाली (प्लेट) में छोड़ें।

ॐ ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ क्लीं शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।

स्वयं के आचमन पात्र के जल से हस्त प्रक्षालन करें ।

प्राणायामः

मन को समाहित (एकाग्र) करने के लिए अनुलोम-विलोम प्राणायाम के १:२ के अनुपात में तीन आवर्तन करें। (१:२ अनुपात अर्थात् श्वास(सांस) लेते समय मन में एक से चार तक गिनें तथा श्वास (सांस) छोड़ते समय मन में एक से आठ तक गिनें)।

अनुलोम-विलोम प्राणायाम की विधि

अ. दाहिने नासिका छिद्र को दाहिने हाथ के अंगूठे से बंद कर बायें नासिका छिद्र से धीरे धीरे मन में एक से चार की गिनती करते हुए श्वास अंदर लें, तत्पश्चात् अनामिका या मध्यमा से बायें नासिका छिद्र को बंद कर दाहिने छिद्र से धीरे धीरे एक से आठ की गिनती करते हुए श्वास बाहर छोड़ें ; पुनः इसी प्रकार गिनते हुए दाहिनी ओर से श्वास लें तथा बायीं ओर से छोड़ें, यह एक आवर्तन हुआ।

आ. इसी प्रकार शेष दो आवर्तन भी करें।
आचमन पात्र के जल से हस्त प्रक्षालन करें।

स्वस्तिवाचनम्

मृग मुद्रा में अक्षत लेकर श्लोक का उच्चारण करें।

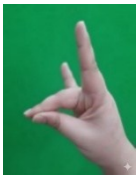

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं
यज्ञ (गं) समिमं दधातु ।
विश्वेदेवाऽस इहमादयन्तामोऽम् प्रतिष्ठ ॥ २ ॥

एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते
सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति ॥ ३ ॥

श्री गुरु पादुका पर अक्षत अर्पण करें।

प्रार्थना

नमस्कार मुद्रा में समाहित होकर एकाग्र मन से प्रार्थना करें ।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥ १ ॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेत् शृणुयादपि ॥ २ ॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ ३ ॥

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ ४ ॥

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ ५ ॥

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ ।

निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ ६ ॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ७ ॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ॥ ८ ॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥ ९ ॥

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ १० ॥

विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् ।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ शुभं कर्म समारभेत् ॥ ११ ॥

ॐ श्री सद्गुरुचरणकमलेभ्यो नमः ।
श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । उमामहेश्वराभ्यां नमः ।
लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः ।
शचीपुरन्दराभ्यां नमः । इष्टदेवताभ्यो नमः ।
कुलदेवताभ्यो नमः । ग्रामदेवताभ्यो नमः ।
स्थानदेवताभ्यो नमः । वास्तुदेवताभ्यो नमः ।
एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।
सर्वेभ्यो महापुरुषेभ्यो नमो नमः ॥ १२ ॥

सङ्कल्पः

बायें हाथ में जल से भरी आचमनी तथा दाहिने हाथ में एक तुलसीदल पकड़ें।
आचमनी को तुलसीदल पर हलके से स्पर्श करते हुए पकड़कर सङ्कल्प का उच्चारण करें।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे

जम्बुद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत-देशैकदेशे..... क्षेत्रे ..... नगरे ..... नाम संवत्सरे ..... अयने .....ऋतौ ..... मासे ..... पक्षे ..... पुण्यतिथौ ..... वासरे सर्वेषु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थानस्थितेषु ..... नाम ....गोत्रोत्पन्नोऽहं /.....नाम्नी .....गोत्रोत्पन्नाऽहं सर्वेषां सारस्वतमहाजनानां श्रीदेवीप्रसादसिद्ध्यर्थे यथाज्ञानं यथाशक्ति यथामिलितोपचारैः श्रीदेवीपूजनं करिष्ये।

आचमनी का जल तुलसीदल के ऊपर से आचमन की थाली/प्लेट में छोड़कर तुलसीदल श्री गुरु पादुका पर अर्पण करें।

घण्टापूजनम्

एक बार घंटी बजाकर घंटी, भूमि पर /उसके स्थान पर रखें।
श्लोक का उच्चारण करते हुए बायें हाथ से घंटी पकड़ कर दाहिने हाथ की अनामिका से घंटी पर चंदन, अक्षत एवं पुष्पदल(पंखुड़ी) लगाएँ।

ॐ आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टानादं प्रकुर्वीत पश्चाद् घण्टां प्रपूजयेत्॥
ॐ घण्टास्थदेवतायै नमः।
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि॥ नमस्करोमि ॥

नमस्कार करें।

वरुणध्यानम्

दाहिने हाथ की अनामिका से चंदन द्वारा भूमि पर चित्रानुसार अष्टदल बनाएँ। (सर्वप्रथम + का चिन्ह फिर x का चिन्ह बनाइये। हाथ धोवें। पूर्व से शुरू कर दक्षिणावर्त दिशा में अनामिका द्वारा कोनों को निरंतर बिना हाथ उठाए जोड़ते हुए पंखुड़ियाँ बनायें।)

हस्त प्रक्षालन करें ।

ॐ नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥
ॐ वरुणं ध्यायामि, आवाहयामि, पूजयामि।

अष्टदल पर चंदन, अक्षत, पुष्प अर्पण करें। अब शुद्ध जल से भरा कलश इस अष्टदल पर प्रतिष्ठित करें।
नमस्कार करें।

कलशपूजनम्

नीचे दिये हुए श्लोक का उच्चारण करते हुए कलश पर पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर इस क्रम में अनामिका द्वारा चंदन तथा मध्यमा द्वारा कुमकुम लगायें। अक्षत तथा पुष्पदल भी इसी क्रम में लगायें।

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ १॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥ २॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशे तु समाश्रिताः॥ ३॥

दाहिनी हथेली से कलश का मुख हलके से बंद रखकर नीचे दिये हुए मंत्र का उच्चारण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः।
अस्मिन्कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् आवाहयामि पूजयामि॥ ४॥

धेनु मुद्रा बनायें और मंत्र का उच्चारण करते हुए कलश के ऊपर दक्षिणावर्त दिशा में (बायीं से
दायीं ओर) पाँच बार घुमायें।

ॐ वं वरुणाय नमः।

इसी तरह मत्स्य मुद्रा कलश के ऊपर रखकर केवल अंगूठों को आगे (ऊपर) से स्वयं की ओर (नीचे) पाँच बार घुमायें।

ॐ वं वरुणाय नमः।

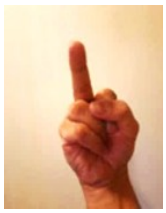

अंकुश मुद्रा (दाहिनी हथेली की मुठ्ठी बाँधकर केवल मध्यमा खोलें) में श्लोक का उच्चारण करते हुए दाहिने कंधे के पीछे से मुद्रा को कलश के मुख पर लायें और नीचे दिये हुए श्लोक का उच्चारण करते हुए पवित्र नदियों / तीर्थों का आवाहन करें।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ ५॥

नीचे दिये हुए मंत्र के साथ पुष्प पर चंदन, अक्षत लगाकर कलश के जल में अर्पण करें।

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। नमस्करोमि॥

नीचे दिये हुए मंत्रों का उच्चारण करते हुए वरुण देवता का आवाहन करें।

ॐ पूर्वे ऋग्वेदाय नमः। ॐ दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः।
ॐ पश्चिमे सामवेदाय नमः। ॐ उत्तरे अथर्वणवेदाय नमः।
ॐ कलशमध्ये अपाम्पतये वरुणाय नमः॥ ६॥

नमस्कार करें।

कलशप्रार्थना

कलश के समीप अञ्जलि मुद्रा करें।
श्लोक का उच्चारण करें।

त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा॥
प्रसन्नो भव। वरदो भव।
अनया पूजया वरुणाद्यावाहिता देवताः प्रीयन्तां न मम।

नमस्कार करें।
अब कलश उसके स्थान से न हिलायें।
एक अन्य आचमन पात्र लें। कलश से चार आचमनी अभिमंत्रित जल इस आचमन पात्र के जल में डालें। ***अब आगे की पूजन विधि में श्री गुरु पादुका के लिए केवल इसी अभिमंत्रित जल का उपयोग करें।*** *आचमनी से थोड़ा अभिमंत्रित जल स्नान पात्र में भी डालें।*

शङ्खपूजनम्

थोड़ा अभिमंत्रित जल शंख में डालकर शंख धोवें।
चार आचमनी अभिमन्त्रित जल शंख में भरकर शंख शंखदानी (स्टॅण्ड) पर रखें।
पुष्प, चंदन, अक्षत मृगमुद्रा में लेकर मंत्र का उच्चारण करें।

ॐ शं पाञ्चजन्याय नमः।
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

शङ्ख पर पुष्प, चंदन, अक्षत अर्पण करें।

नमस्करोमि॥

नमस्कार करें।

प्रोक्षणम्

दाहिनी हथेली पर एक तुलसी दल रखकर बायें हाथ से शंख का थोड़ा जल तुलसी दल पर डालें।
शंख को उसके नियत स्थान पर रख दें।
दाहिनी मुठ्ठी को हलके से बंदकर, पूजा सामग्री पर मन ही मन इष्ट मंत्र / ॐ नमः शिवाय का जप करते हुए मुट्ठी के जल से प्रोक्षण करें।

आत्मप्रोक्षणम्

इसी तुलसी दल को बायीं हथेली पर रखकर दाहिने हाथ से शंख का थोड़ा जल तुलसीदल पर डालें।
दाहिने हाथ की मृग मुद्रा द्वारा तुलसी दल पकड़ें।
श्लोक का उच्चारण करते हुए, तुलसी दल द्वारा बायीं ओर नीचे, ऊपर, वैसे ही दाहिनी ओर ऊपर, नीचे इस क्रम में आत्म प्रोक्षण करें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

शेष जल के साथ तुलसी दल को थाली (प्लेट) में डाल दें।

आसनशुद्धिः

आसन के दाहिने, अग्र कोने को थोड़ा ऊपर उठायें।

दाहिनी अनामिका में चंदन/गंध लगाकर चित्रानुसार दर्शाई दिशा में हाथ उठाए बिना भूमि पर त्रिकोण बनायें।

हस्त प्रक्षालन करें।

गंध /चंदन, अक्षत, पुष्पदल त्रिकोण पर समर्पित करें।

दाहिने हाथ की अनामिका और मध्यमा को त्रिकोण के बीच में रखें, बायें हाथ से दाहिनी कोहनी को स्पर्श करते हुए श्लोक का उच्चारण करें।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥ १॥

ॐ आधारशक्तये नमः। ॐ कूर्मासनाय नमः।
ॐ अनन्तासनाय नमः। ॐ विमलासनाय नमः।
ॐ आत्मासनाय नमः॥ २॥

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। नमस्करोमि॥

नमस्कार करें एवं हस्त प्रक्षालन करें।

दिग्बन्धः

मस्तक से थोड़ा ऊपर चित्रानुसार त्रिशूल मुद्रा बनाकर कलाई का उपयोग करते हुए दक्षिणावर्त (बायीं से दायीं ओर) चारों दिशाओं में तीन बार मुद्रा घुमाते हुए नीचे दिये हुए श्लोक का उच्चारण करें।

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

श्लोक के अंत में मुद्रा से सामने की ओर एक झटका दें।

दीपकपूजनम्

पुष्प में गंध, अक्षत लगाकर उसे मृग मुद्रा में पकड़े हुए श्लोक का उच्चारण करें।

दीपो ज्योतिः परब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दनः।
दीपो हरतु मे ध्वान्तं संविद्दीप नमोऽस्तु ते॥
ॐ दीपदेवतायै नमः।
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

चौरंग (चौकी) के ऊपर रखे हुए प्रज्ज्वलित प्रधान दीपक को पुष्प, गंध, अक्षत अर्पण करें।

नमस्करोमि॥

नमस्कार करें।

भैरवनमस्कारः

पुष्प में गंध, अक्षत लगाकर उसे मृग मुद्रा में पकड़े हुए श्लोक का उच्चारण करें।

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि॥
ॐ भं भैरवाय नमः।
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

यह पुष्प चौरंग/चौकी पर घंटी की बायीं ओर अर्पित करें।

नमस्करोमि॥

नमस्कार करें।

श्रीदेवीपूजनम्

ध्यानम्

दाहिने हाथ की मृग मुद्रा में पुष्प लेकर श्लोकों का उच्चारण करें।

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद् हस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणाम् अनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥ १॥

सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत्-
तारानायकशेखरां स्मितमुखीम् आपीनवक्षोरुहाम्।
पाणिभ्याम् अलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं
सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत् पराम् अम्बिकाम्॥ २॥

सकुङ्कुमविलेपनाम् अलिकचुम्बिकस्तूरिकां
समन्दहसितेक्षणां सशरचापपाशाङ्कुशाम्।
अशेषजनमोहिनीम् अरुणमाल्यभूषाम्बरां
जपाकुसुमभासुरां जपविधौ स्मरेद् अम्बिकाम्॥ ३॥

ॐ श्रीमात्रे नमः। ध्यानं समर्पयामि॥

श्री गुरु पादुका पर पुष्प अर्पण करें।

आवाहनम्

दाहिने हाथ की मृग मुद्रा में अक्षत लेकर श्लोक का उच्चारण करें।

महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्दविग्रहे।
सर्वभूतहिते मातः एहि एहि परमेश्वरि॥
ॐ श्रीमात्रे नमः। आवाहनं समर्पयामि॥

श्री गुरु पादुका पर अक्षत अर्पण करें।

आसनम्

दाहिने हाथ की मृग मुद्रा में पुष्प लें। श्लोक का उच्चारण करें।

सदाशिवाङ्कसंस्थाने सर्वाधारे महेश्वरि।
सर्वतत्त्वमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ श्रीमात्रे नमः। आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि॥

श्री गुरु पादुका पर पुष्प अर्पण करें।

पाद्यम्

श्लोक का उच्चारण करें।

पाद्यमाद्यन्तशून्यायै वेद्यायै वेदवादिभिः।
तुभ्यं दास्यामि पद्माक्षि सुगन्धिं निर्मलं जलम्॥
ॐ श्रीमात्रे नमः। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥

आचमनी से दो बार अभिमन्त्रित जल श्री गुरु पादुका पर अर्पण करें।

अर्घ्यम्

आचमनी में अभिमन्त्रित जल भरकर आचमनी को आचमन पात्र पर रखें। आचमनी के जल में गन्ध, अक्षत, पुष्प डालकर, आचमनी दाहिने हाथ में पकड़े हुए श्लोक का उच्चारण करें।

अघहीने गृहाणेदम् अर्घ्यम् अष्टाङ्ग-संयुतम्।
अम्बाखिलानां जगताम् अम्बुजासन-वन्दिते॥
ॐ श्रीमात्रे नमः। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि॥

श्री गुरु पादुका पर आचमनी द्वारा जल सहित गंध, अक्षत, पुष्प अर्पण करें।

आचमनम्

श्लोक का उच्चारण करते हुए आचमनी से तीन बार अभिमंत्रित जल श्री गुरु पादुका पर अर्पण करें और एक आचमनी अभिमंत्रित जल तीर्थपात्र में डालें।

गङ्गातोयं समानीतं सुवर्णकलशे स्थितम्।
आचम्यतां महाभागे भवानि भवभामिनि॥
ॐ श्रीमात्रे नमः। आचमनीयं जलं समर्पयामि॥

स्नानम्

कलश से एक आचमनी अभिमंत्रित जल लेकर स्नान पात्र में डालें।
सावधानीपूर्वक श्री गुरु पादुका पर अर्पित किये गए पुष्प एकत्रित कर निर्माल्य पात्र में डालें। हस्त प्रक्षालन करें।
श्लोक का उच्चारण करते हुए, स्नानपात्र के संपूर्ण अभिमंत्रित जल से श्री गुरु पादुका का अभिषेक करें।

साध्वीनाम् अग्रतोगण्ये साधुसङ्घसमादृते।
सर्वतीर्थमयं तोयं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ श्रीमात्रे नमः। स्नानीयं जलं समर्पयामि॥
स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि॥

तत्पश्चात् रिक्त स्नानपात्र नियत स्थान पर रखें।
एक आचमनी अभिमंत्रित जल लेकर तीर्थ पात्र में डालें।
सोमसूत्र/अभिषेक की थाली(प्लेट) में अर्पित अभिषेक के जल से अनामिका एवं मध्यमा द्वारा एक बार आत्म प्रोक्षण करें।
हस्त प्रक्षालन करें।
बायीं हथेली में एक स्वच्छ रुमाल /तौलिया लेकर उस पर श्री गुरु पादुका रखकर उसे अच्छी तरह से पोंछें।
श्री गुरु पादुका पर चंदन लगाएँ।
सोमसूत्र/अभिषेक की थाली(प्लेट) के पूरे जल को तीर्थ पात्र में डालें तथा सोमसूत्र/अभिषेक की थाली(प्लेट)को एक ओर रख दें।
पुष्पों से सजी थाली (प्लेट) चौरंग/चौकी पर रखें।
दाहिने हाथ से श्री गुरु पादुका इस थाली में स्थापित करें।

वस्त्रम्

दाहिने हाथ से मृग मुद्रा में अक्षत लेकर श्लोक का उच्चारण करते हुए श्री गुरु पादुका पर अक्षत अर्पण करें।

दुकूलद्वितयं दिव्यं कञ्चुकं च मनोहरम् ।
देवदेवि गृहाणेदं दिगम्बरशिवप्रिये ॥
ॐ श्रीमात्रे नमः । वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि ॥
तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥

एक आचमनी अभिमंत्रित जल तीर्थ पात्र में डालें।

यज्ञोपवीतम्

श्लोक का उच्चारण करते हुए श्री गुरु पादुका पर अक्षत अर्पण करें।

उपवीतं गृहाणेदम् उपमाशून्यवैभवे ।
उमाहैमवति प्रीत्या हेमसूत्रसमन्वितम् ॥
ॐ श्रीमात्रे नमः । यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥
तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥

एक आचमनी अभिमंत्रित जल तीर्थ पात्र में डालें।

आभूषणम्

श्लोक का उच्चारण करते हुए श्री गुरु पादुका पर अक्षत अर्पण करें।

माङ्गल्यमणिसंयुक्त-मुक्ताफलसमन्वितम् ।
दत्तं मङ्गलसूत्रं ते गृहाणाम्ब शुभं कुरु ॥
ॐ श्रीमात्रे नमः । नानालङ्काराणि समर्पयामि ॥

गन्धः

श्लोक का उच्चारण करते हुए श्री गुरु पादुका के अँगूठों पर चंदन लगायें।

कर्पूरागरुसंयुक्तं कपालिप्राणनायिके ।
कस्तूरीतिलकं गन्धं सर्वाङ्गे प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ श्रीमात्रे नमः । गन्धं समर्पयामि ॥

अक्षताः

श्लोक का उच्चारण करते हुए श्री गुरु पादुका पर अक्षत अर्पण करें।

अक्षतान् धवलान् देवि शालीयांस्तण्डुलान् शुभान्।
हरिद्राकुङ्कुमोपेतान् गृहाणाम्ब कृपानिधे॥
ॐ श्रीमात्रे नमः। अक्षतान् समर्पयामि॥

पुष्पम्

दाहिने हाथ से मृग मुद्रा में पुष्प लें।
श्लोक का उच्चारण करते हुए श्री गुरु पादुका पर पुष्प अर्पण करें।

पद्मशङ्खजपापुष्पैः पारिजातैश्च चम्पकैः।
पूजयामि प्रसीद त्वं पद्माक्षि भुवनेश्वरि॥
ॐ श्रीमात्रे नमः। पुष्पाणि समर्पयामि॥

सौभाग्यद्रव्यम्

श्लोक का उच्चारण करते हुए, दायें हाथ की मृग मुद्रा द्वारा हल्दी तथा कुमकुम अर्पण करें।

कज्जलं चैव सिन्दूरं हरिद्राकुङ्कुमानि च।
भक्त्यार्पितानि श्रीमातः सौभाग्यानि च स्वीकुरु॥
ॐ श्रीमात्रे नमः। सौभाग्यद्रव्याणि समर्पयामि॥

श्रीदुर्गा-अष्टोत्तरशतनामावल्या सहितः कुङ्कुमार्चने विनियोगः।

अष्टोत्तरशतनामावली के प्रत्येक "नमः" पर श्री गुरु पादुका पर मृग मुद्रा से कुमकुम अर्पण करें।

श्रीदुर्गा-अष्टोत्तरशतनामावलिः

ॐ माहेश्वर्यै नमः।
ॐ महादेव्यै नमः।
ॐ जयन्त्यै नमः।
ॐ सर्वमङ्गलायै नमः।
ॐ लज्जायै नमः।
ॐ भगवत्यै नमः।
ॐ वन्द्यायै नमः।
ॐ भवान्यै नमः।
ॐ पापनाशिन्यै नमः।
ॐ चण्डिकायै नमः। (१०)
ॐ कालरात्र्यै नमः।
ॐ भद्रकाल्यै नमः।
ॐ अपराजितायै नमः।
ॐ महाविद्यायै नमः।
ॐ महामेधायै नमः।
ॐ महामायायै नमः।
ॐ महाबलायै नमः।
ॐ कात्यायन्यै नमः।
ॐ जयायै नमः।
ॐ दुर्गायै नमः। (२०)
ॐ मन्दारवनवासिन्यै नमः।
ॐ आर्यायै नमः।
ॐ गिरिसुतायै नमः।
ॐ धात्र्यै नमः।

ॐ महिषासुरघातिन्यै नमः।
ॐ सिद्धिदायै नमः।
ॐ बुद्धिदायै नमः।
ॐ नित्यायै नमः।
ॐ वरदायै नमः।
ॐ वरवर्णिन्यै नमः। (३०)
ॐ अम्बिकायै नमः।
ॐ सुखदायै नमः।
ॐ सौम्यायै नमः।
ॐ जगन्मात्रे नमः।
ॐ शिवप्रियायै नमः।
ॐ भक्तसन्तापसंहर्त्र्यै नमः।
ॐ सर्वकामप्रपूरिण्यै नमः।
ॐ जगत्कर्त्र्यै नमः।
ॐ जगद्धात्र्यै नमः।
ॐ जगत्पालनतत्परायै नमः। (४०)
ॐ अव्यक्तायै नमः।
ॐ व्यक्तरूपायै नमः।
ॐ भीमायै नमः।
ॐ त्रिपुरसुन्दर्यै नमः।
ॐ अपर्णायै नमः।
ॐ ललितायै नमः।
ॐ वेद्यायै नमः।
ॐ पूर्णचन्द्रनिभाननायै नमः।
ॐ चामुण्डायै नमः।
ॐ चतुरायै नमः। (५०)
ॐ चन्द्रायै नमः।
ॐ गुणत्रयविभाविन्यै नमः।

ॐ हेरम्बजनन्यै नमः।

ॐ काल्यै नमः।

ॐ त्रिगुणायै नमः।

ॐ यशोधारिण्यै नमः।

ॐ उमायै नमः।

ॐ कलशहस्तायै नमः।

ॐ दैत्यदर्पनिषूदिन्यै नमः।

ॐ बुद्ध्यै नमः। (६०)

ॐ कान्त्यै नमः।

ॐ क्षमायै नमः।

ॐ शान्त्यै नमः।

ॐ पुष्ट्यै नमः।

ॐ तुष्ट्यै नमः।

ॐ धृत्यै नमः।

ॐ मत्यै नमः।

ॐ वरायुधधरायै नमः।

ॐ धीरायै नमः।

ॐ गौर्यै नमः। (७०)

ॐ शाकम्भर्यै नमः।

ॐ शिवायै नमः।

ॐ अष्टसिद्धिप्रदायै नमः।

ॐ वामायै नमः।

ॐ शिववामाङ्गवासिन्यै नमः।

ॐ धर्मदायै नमः।

ॐ धनदायै नमः।

ॐ श्रीदायै नमः।

ॐ कामदायै नमः।

ॐ मोक्षदायै नमः। (८०)

ॐ अपरायै नमः।
ॐ चित्स्वरूपायै नमः।
ॐ चिदानन्दायै नमः।
ॐ जयश्रियै नमः।
ॐ जयदायिन्यै नमः।
ॐ सर्वमङ्गल-माङ्गल्यायै नमः।
ॐ जगत्त्रयहितैषिण्यै नमः।
ॐ शर्वाण्यै नमः।
ॐ पार्वत्यै नमः।
ॐ धन्यायै नमः। (९०)
ॐ स्कन्दमात्रे नमः।
ॐ अखिलेश्वर्यै नमः।
ॐ प्रपन्नार्तिहरायै नमः।
ॐ देव्यै नमः।
ॐ सुभगायै नमः।
ॐ कामरूपिण्यै नमः।
ॐ निराकारायै नमः।
ॐ साकारायै नमः।
ॐ महाकाल्यै नमः।
ॐ सुरेश्वर्यै नमः। (१००)
ॐ श्रद्धायै नमः।
ॐ ध्रुवायै नमः।
ॐ कृत्यायै नमः।
ॐ मृडान्यै नमः।
ॐ भक्तवत्सलायै नमः।
ॐ सर्वशक्तिसमायुक्तायै नमः।
ॐ शरण्यायै नमः।
ॐ सर्वकामदायै नमः। (१०८)

अष्टोत्तरशतनामावलि के अंत में श्री गुरु पादुका के ऊपर समर्पित कुमकुम सतर्कता से सरका दें ताकि श्री गुरु पादुका स्पष्ट दिखे और आगे की विधि करने में सहजता हो, पर ध्यान रहे, श्री गुरु पादुका न हिलायें।

हस्त प्रक्षालन करें।

धूपः

माचिस की तीली द्वारा अगरबत्ती / धूप प्रज्वलित करें। बायें हाथ से घंटी बजाते हुए एवं नीचे दिये हुए श्लोक का उच्चारण करते हुए श्री गुरु पादुका को अगरबत्ती/धूप दिखाएँ (चित्र में दर्शाई गई दिशा के अनुसार)

धूपं ददामि ते रम्यं गुग्गुलागरुमिश्रितम्।
गृहाणेमं महादेवि भक्तानामिष्टदायिनि॥
ॐ श्रीमात्रे नमः। धूपम् आघ्रापयामि॥

दीपः

श्लोक उच्चारण के पूर्व माचिस की तीली द्वारा घी का दीपक प्रज्वलित करें। बायें हाथ से घंटी बजाते हुए, दाहिने हाथ में दीपक लेकर, नीचे दिये हुए श्लोक का उच्चारण करते हुए श्री गुरु पादुका को दीपक दिखाएँ (चित्र में दर्शाई गई दिशा के अनुसार)

आज्यवर्तियुतं दीपं नगेन्द्रकुलदीपिके।
अम्ब पश्य मया दत्तम् अन्तर्ध्वान्तापहारिणि॥
ॐ श्रीमात्रे नमः। दीपं दर्शयामि॥

दीप-दर्शन के तुरंत पश्चात् निर्माल्य (पुष्प) द्वारा दीप बुझायें (फूँक न मारें)।

नैवेद्यम्

नमस्कार करें।

हस्त प्रक्षालन करें। अनामिका पर चंदन लगाकर भूमि पर स्वस्तिक

का चिन्ह बनाएँ। हस्त प्रक्षालन करें। नैवेद्य पात्र में नैवेद्य रखकर, पात्र स्वस्तिक पर रखें। दाहिने हाथ में कुछ तुलसी दल लेकर उन्हें अभिमंत्रित जल से धोवें।

तुलसी दल को दाहिनी हथेली पर रखकर उन पर थोड़ा अभिमंत्रित जल डालें।

मंत्र का उच्चारण करें।

हस्तौ प्रक्षाल्य नैवेद्यं पुरतः स्थाप्य गायत्र्या सम्प्रोक्ष्य तुलसीदलैः आच्छाद्य नैवेद्यम्।

दाहिने हाथ पर बायाँ हाथ रखकर धेनु मुद्रा बनाएँ।
धेनु मुद्रा में ही कलाई का उपयोग कर नीचे दिये हुए मंत्र का उच्चारण करते हुए मुद्रा को तीन बार नैवेद्य पात्र के ऊपर घुमायें।

ॐ कात्यायनाय विद्महे कन्याकुमार्यै धीमहि।
तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात्॥ १॥

दाहिनी हथेली को हलके से बंदकर (हलकी मुठ्ठी) तुलसी दल द्वारा नैवेद्य पर प्रोक्षण करें (जल छिड़कें)।

एक तुलसीदल नैवेद्य में डालें।
फिर सभी तुलसीदल बायीं हथेली पर रखें।
नीचे दिये हुए मंत्रों का क्रम से उच्चारण करें। प्रत्येक स्वाहा पर एक-एक तुलसीदल श्री गुरु पादुका पर अर्पण करें। (कुल ५ बार)
अंतिम मंत्र ('ॐ प्राण-अपान-व्यान-उदान-समानाः') का उच्चारण करते समय पाँचों अंगुलियों की ग्रास-मुद्रा नैवेद्य की ओर से श्री गुरु पादुका की ओर करें।

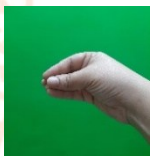

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा।
ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।
ॐ समानाय स्वाहा।
ॐ प्राण-अपान-व्यान-उदान-समानाः॥ २॥
ॐ श्रीमात्रे नमः। आचमनीयं जलं समर्पयामि॥

एक आचमनी अभिमंत्रित जल तीर्थ पात्र में डालें।
नीचे दिये हुए मंत्र का उच्चारण करते हुए एक आचमनी अभिमंत्रित जल नैवेद्य पर डालें।

पूर्वापोषणं समर्पयामि।

नीचे दिये हुए श्लोक का उच्चारण करें।

नानाविधानि भक्ष्याणि व्यञ्जनानि हरप्रिये।
यथेष्टं भुङ्क्ष नैवेद्यं षड्रसं च चतुर्विधम्॥ ३॥

ॐ श्रीमात्रे नमः। नैवेद्यं निवेदयामि।
नानाऋतुफलानि च समर्पयामि॥

नमस्कार करें।
एक मिनट आँखें मूँद कर ध्यान मुद्रा में बैठें। फिर एक बार घंटी बजाएं। क्रम से नीचे दिये हुए मंत्रों का उच्चारण करें।

आचमनीयं जलं समर्पयामि॥
एक आचमनी अभिमंत्रित जल तीर्थ पात्र में डालें।

उत्तरापोषणं समर्पयामि॥

एक आचमनी अभिमंत्रित जल नैवेद्य पर डालें।

मुखप्रक्षालनं समर्पयामि॥

एक आचमनी अभिमंत्रित जल तीर्थ पात्र में डालें।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि॥

एक आचमनी अभिमंत्रित जल तीर्थ पात्र में डालें।
नीचे दिये हुए मंत्र का उच्चारण करते हुए दोनों अनामिका पर चंदन लगाकर दाहिनी कलाई को बायीं कलाई पर रखते हुए अंगूठे द्वारा एक हलके झटके से चंदन श्री गुरु पादुका पर छिड़कें।

करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि॥

ताम्बूलम्

श्लोक उच्चारण के साथ एक आचमनी अभिमंत्रित जल पान-सुपारी पर अर्पण करें।

ताम्बूलं मुक्तिकाचूर्णकर्पूरादिसमन्वितम्।
जिह्वाजाड्योच्छेदकरं त्रिपुरे प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ श्रीमात्रे नमः। मुखशुद्ध्यर्थं ताम्बूलं समर्पयामि॥

दक्षिणा

श्लोक उच्चारण के साथ एक आचमनी जल दक्षिणा पर अर्पण करें।

पूजापूर्णत्वसिद्ध्यर्थं पूर्णे पूर्णफलप्रदे।
हेमरत्नमयीं द्रव्यदक्षिणां स्वीकुरुष्व मे॥
ॐ श्रीमात्रे नमः।
साङ्गतासिद्ध्यर्थं हिरण्यगर्भदक्षिणां समर्पयामि॥

नीराजनम्

श्लोक उच्चारण के पहले मंगल-आरती, कपूर के साथ प्रज्वलित करें।
नीचे दिये हुए श्लोकों का उच्चारण करते हुए, बायें हाथ से घंटी बजाते हुए, दाहिने हाथ से आरती दक्षिणावर्त दिशा में (बायीं से दायीं ओर) घुमाते हुए करें।

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि॥ १॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव॥ २॥

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कलामालिनी
मातङ्गी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी।
शक्तिः शङ्करवल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी
ह्रींकारी त्रिपुरा परात्परमयी माता कुमारीत्यसि॥ ३॥

अन्तस्तेजो बहिस्तेजः एकीकृत्यामितप्रभम्।
त्रिधा देवि परिभ्राम्य नीराजनं निवेदये॥ ४॥

समस्तचक्रचक्रेशीयुते देवि नवात्मिके।
आरार्तिकं मया दत्तं गृहाणाशेषसिद्धये॥ ५॥

ॐ श्रीमात्रे नमः।

तत्पश्चात् घंटी को फिर से उसके नियत स्थान पर रखकर उसकी भी एक बार आरती करें।
अब बायें हाथ से आरती पकड़ें।

जल आरती

दाहिने हाथ से दक्षिणावर्त दिशा में शंख तीन बार घुमाकर मंत्र का उच्चारण करते हुए श्री गुरु पादुका की जल-आरती करें।

नीराजनं दर्शयामि। तदन्ते जलारार्तिकं समर्पयामि॥

शंख के जल को तीर्थ पात्र में डालकर शंख को उसके नियत स्थान पर रखें।
नीचे दिये हुए मंत्र का उच्चारण करते हुए, दाहिनी हथेली को आरती के ऊपर से घुमाते हुए, श्री गुरु पादुका की ओर दर्शावें।

देवाभिवन्दनम्।

फिर नीचे दिये हुए मंत्र का उच्चारण करते हुए स्वयं भी आरती लेवें।

आत्माभिवन्दनम्॥

हस्त प्रक्षालन करें।

मन्त्रपुष्पाञ्जलिः

अंजलि मुद्रा में पुष्प लेकर श्री गुरु पादुका के समक्ष मुद्रा दर्शावें।
श्लोक का उच्चारण करते हुए अंजलि मुद्रा से श्री गुरु पादुका पर पुष्प अर्पण करें।

पुष्पाञ्जलिं गृहाणेमं परब्रह्मस्वरूपिणि।
भक्त्या समर्पितं देवि प्रसन्ना भव सर्वदा॥
ॐ श्रीमात्रे नमः। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि॥

प्रदक्षिणा

नमस्कार मुद्रा में श्लोक का उच्चारण करते हुए कलाई के उपयोग से दक्षिणावर्त दिशा में बायीं से दायीं ओर नमस्कार मुद्रा तीन बार घुमायें।

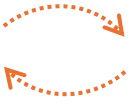

सर्वमङ्गललाभाय सर्वपापनिवृत्तये।
प्रदक्षिणां करोम्यम्ब प्रसीद परमेश्वरि॥

ॐ श्रीमात्रे नमः। प्रदक्षिणां समर्पयामि॥

प्रार्थना

नमस्कार मुद्रा के साथ श्लोक का उच्चारण करें।

चरणकमलयुग्मं पङ्कजैः पूजयित्वा
कनककमलमालां कण्ठदेशेऽर्पयित्वा।
शिरसि विनिहितोऽयं रक्तपुष्पाञ्जलिस्ते
हृदयकमलमध्ये देवि हर्षं तनोतु (२)॥

ॐ श्रीमात्रे नमः। प्रार्थनां समर्पयामि॥

नमस्कारः

नमस्कार मुद्रा के साथ श्लोक का उच्चारण करें।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥
ॐ श्रीमात्रे नमः। नमस्करोमि॥

विशेषार्घ्यम्

आचमनी में अभिमंत्रित जल भरकर उसे आचमन पात्र पर रखें।
आचमनी के जल में गंध, अक्षत, पुष्पदल डालें।
दाहिने हाथ में जल से भरी आचमनी पकड़े हुए श्लोक का उच्चारण करें।

कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि॥
ॐ श्रीमात्रे नमः। विशेषार्घ्यं समर्पयामि॥

श्लोक के अंत में आचमनी श्री गुरु पादुका के समक्ष दक्षिणावर्त दिशा में बायीं से दायीं ओर तीन बार घुमाकर जल तीर्थ पात्र में छोड़ दें।

प्रार्थनापूर्वकं क्षमापनम्

नमस्कार मुद्रा के साथ श्लोक का उच्चारण करें।

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि॥ १॥

अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे।
कोऽपरः सहते लोके केवलं मातरं विना॥ २॥

ॐ श्रीमात्रे नमः। प्रार्थनापूर्वकं क्षमां याचे॥

समर्पणम्

बायें हाथ में आचमनी में अभिमंत्रित जल तथा दाहिने हाथ में तुलसी दल लेकर आचमनी को हलके से तुलसी दल पर स्पर्श करते हुए पकड़ें। श्लोक का उच्चारण करें।

जपो जल्पश्शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचना
गतिः प्रादक्षिण्यक्रमणमशनाद्याहुतिविधिः।
प्रणामस्संवेशस्सुखमखिलमात्मार्पणदृशा
सपर्यापर्यायस्तव भवतु यन्मे विलसितम् (२)॥ १॥

अनेन कृतेन पूजाराधनाकर्मणा श्रीजगदम्बा परासंवित्स्वरूपिणी प्रीयताम्।
ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु।
ॐ तत्सत् श्रीजगदम्बार्पणमस्तु॥ २॥

तुलसी दल के ऊपर से आचमनी का जल तीर्थ पात्र में छोड़ें। तुलसीदल श्री गुरु पादुका पर अर्पण करें।

नीचे दिये हुए श्लोक का उच्चारण करते हुए दाहिनी अनामिका एवं मध्यमा द्वारा श्री गुरु पादुका का स्पर्श करें। फिर वही अनामिका एवं मध्यमा स्वयं के अनाहत चक्र पर रखें।

तिष्ठ तिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वरि।
यत्र ब्रह्मादयो देवाः सर्वे तिष्ठन्ति मे हृदि॥ ३॥

नमस्कार करें।

जपः

इष्टमंत्र / ॐ नमः शिवाय का जप तीन मिनट तक करें।

जप के अंत में नमस्कार करें।

स्वयं के इष्ट देव/ देवी के अनुसार नीचे दिये हुए किसी एक श्लोक के उच्चारण के पश्चात् एक आचमनी जल दाहिने हाथ की अनामिका एवं मध्यमा के ऊपर से थाली में छोड़कर जप अर्पण करें।

(देवीश्लोकः) - गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

(देवश्लोकः) - गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर॥

***ॐ नमः पार्वतीपतये हर हर महादेव** का घोष करें।*

तीर्थ, पुष्प, प्रसाद का वितरण करें एवं स्वयं भी ग्रहण करें।

....

॥ सभा समाप्ति प्रार्थना ॥

नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषकाः ।
अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुस्सदा ॥ १ ॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात् ॥ २ ॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

॥ ॐ नमः पार्वतीपतये हर हर महादेव ॥

॥ चक्षुर्नो धेहि चक्षुषे चक्षुर्विख्यै तनूभ्यः सञ्चेदं वि च पश्येम ॥

॥ श्री चित्रापुर मठः श्रीवल्ली ॥

Shrī Chitrāpur Math
Shirali
Uttara Kannada Dist
Karnataka
India 581354

admin@chitrapurmath.in
www.chitrapurmath.net
www.youtube.com/@shrichitrapurmathvideos
www.instagram.com/shrichitrapurmath/
www.facebook.com/shrichitrapurmath/